Pradeep

Vishaka

Model: Web-MatchAnalysis

Order No: 112920

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
30-31/12/1985	जन्म तिथि	21/09/1990
सोम-मंगलवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 05:20:00	जन्म समय	13:50:00 घंटे
घटी 55:23:43	जन्म समय(घटी)	18:26:48 घटी
India	देश	India
Alibag	स्थान	Pen
18:39:19 उत्तर	अक्षांश	18:44:08 उत्तर
72:52:19 पूर्व	रेखांश	73:05:08 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:38:31	स्थानिक संस्कार	-00:37:39 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:10:30	सूर्योदय	06:26:25
18:12:11	सूर्यास्त	18:35:00
23:39:32	चित्रपक्षीय अयनांश	23:43:53

वृश्चिक	लग्न	धनु
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
कर्क	राशि	तुला
चन्द्र	राशि-स्वामी	शुक्र
आश्लेषा	नक्षत्र	चित्रा
बुध	नक्षत्र स्वामी	मंगल
4	चरण	3
प्रीति	योग	ऐन्द्र
बालव	करण	तैतिल
डो-डोभाल	जन्म नामाक्षर	रा-राखी
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या
विप्र	वर्ण	शूद्र
जलचर	वश्य	मानव
मार्जार	योनि	व्याघ्र
राक्षस	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
श्वान	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 2वर्ष 2मा 19दि		19:29:53	वृश्चि	लग्न	धनु	15:11:10	मंगल 2वर्ष 10मा 0दि	
सूर्य		15:34:52	धनु	सूर्य	कन्या	04:22:09	गुरु	
21/03/2015		28:15:35	कर्क	चंद्र	तुला	01:16:02	23/07/2011	
20/03/2021		16:17:47	तुला	मंगल	वृष	15:14:10	23/07/2027	
सूर्य	08/07/2015	27:46:42	वृश्चि	बुध	सिंह	17:01:52	गुरु	09/09/2013
चन्द्र	07/01/2016	24:22:54	मक	गुरु	कर्क	12:57:09	शनि	22/03/2016
मंगल	14/05/2016	10:52:43	धनु	शुक्र	सिंह	23:37:10	बुध	28/06/2018
राहु	08/04/2017	11:23:44	वृश्चि	शनि व	धनु	24:58:33	केतु	04/06/2019
गुरु	25/01/2018	13:16:50	मेष व	राहु व	मक	12:12:59	शुक्र	02/02/2022
शनि	07/01/2019	13:16:50	तुला व	केतु व	कर्क	12:12:59	सूर्य	21/11/2022
बुध	13/11/2019	25:46:58	वृश्चि	हर्ष	धनु	11:53:15	चन्द्र	22/03/2024
केतु	20/03/2020	09:53:23	धनु	नेप व	धनु	18:04:05	मंगल	26/02/2025
शुक्र	20/03/2021	13:13:50	तुला	प्लूटो	तुला	22:08:11	राहु	23/07/2027

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:39:32 चित्रपक्षीय अयनांश 23:43:53

लग्न-चलित

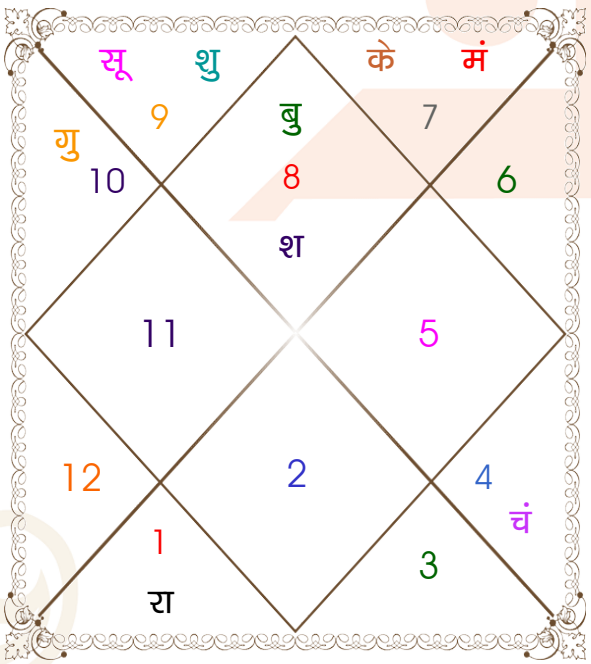

लग्न-चलित

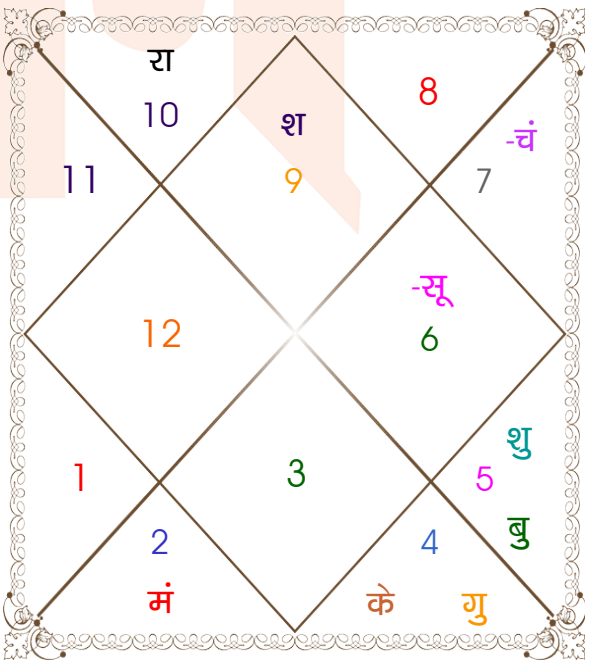

चलित अंश

भाव मध्य		भाव संधि		भाव	भाव संधि		भाव मध्य
वृश्चि	19:29:53	वृश्चि	05:26:36	1	धनु	01:57:27	धनु 15:11:10
धनु	21:23:19	धनु	05:26:36	2	मक	01:57:27	मक 18:43:43
मक	23:16:45	मक	07:20:02	3	कुंभ	05:30:00	कुंभ 22:16:17
कुंभ	25:10:10	कुंभ	09:13:27	4	मीन	09:02:34	मीन 25:48:50
मीन	23:16:45	मीन	09:13:27	5	मेष	09:02:34	मेष 22:16:17
मेष	21:23:19	मेष	07:20:02	6	वृष	05:30:00	वृष 18:43:43
वृष	19:29:53	वृष	05:26:36	7	मिथु	01:57:27	मिथु 15:11:10
मिथु	21:23:19	मिथु	05:26:36	8	कर्क	01:57:27	कर्क 18:43:43
कर्क	23:16:45	कर्क	07:20:02	9	सिंह	05:30:00	सिंह 22:16:17
सिंह	25:10:10	सिंह	09:13:27	10	कन्या	09:02:34	कन्या 25:48:50
कन्या	23:16:45	कन्या	09:13:27	11	तुला	09:02:34	तुला 22:16:17
तुला	21:23:19	तुला	07:20:02	12	वृश्चि	05:30:00	वृश्चि 18:43:43

तारा चक्र

रेवती	ज्येष्ठा	आश्लेषा	**जन्म**	चित्रा	धनिष्ठा	मृगशिरा
अश्विनी	मूल	मघा	**सम्पत**	स्वाति	शतभिषा	आर्द्रा
भरणी	पूर्वाषाढ़ा	पू०फाल्गुनी	**विपत**	विशाखा	पू०भाद्रपद	पुनर्वसु
कृतिका	उत्तराषाढ़ा	उ०फाल्गुनी	**क्षेम**	अनुराधा	उ०भाद्रपद	पुष्य
रोहिणी	श्रवण	हस्त	**प्रत्यारि**	ज्येष्ठा	रेवती	आश्लेषा
मृगशिरा	धनिष्ठा	चित्रा	**साधक**	मूल	अश्विनी	मघा
आर्द्रा	शतभिषा	स्वाति	**वध**	पूर्वाषाढ़ा	भरणी	पू०फाल्गुनी
पुनर्वसु	पू०भाद्रपद	विशाखा	**मित्र**	उत्तराषाढ़ा	कृतिका	उ०फाल्गुनी
पुष्य	उ०भाद्रपद	अनुराधा	**अतिमित्र**	श्रवण	रोहिणी	हस्त

चलित कुंडली

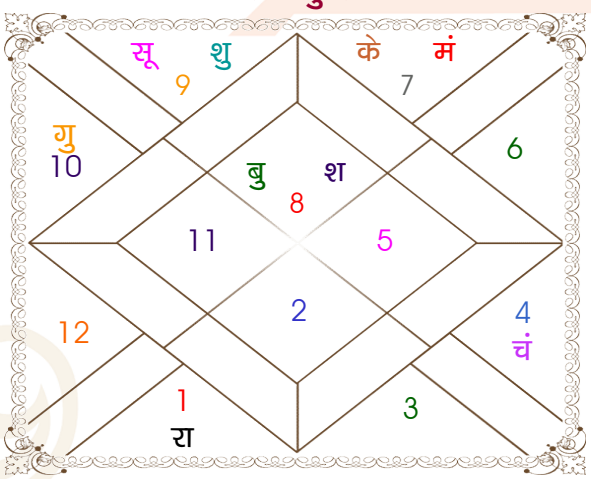

चलित कुंडली

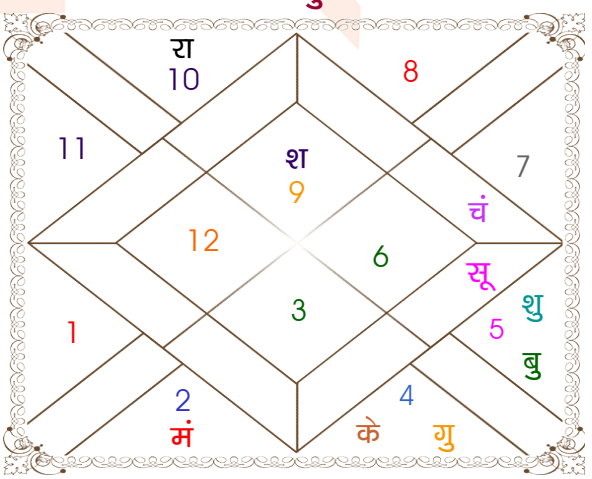

चन्द्र कुंडली

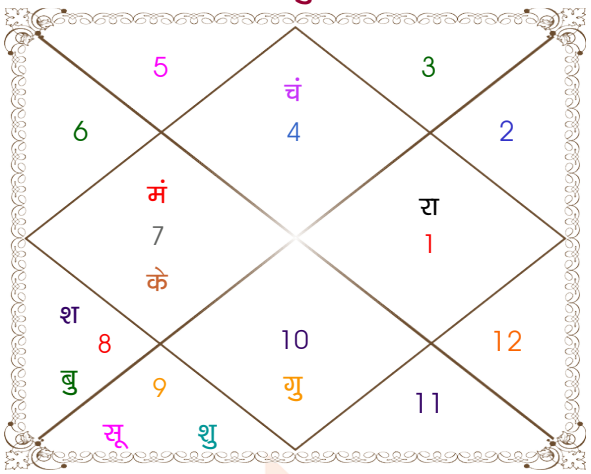

चन्द्र कुंडली

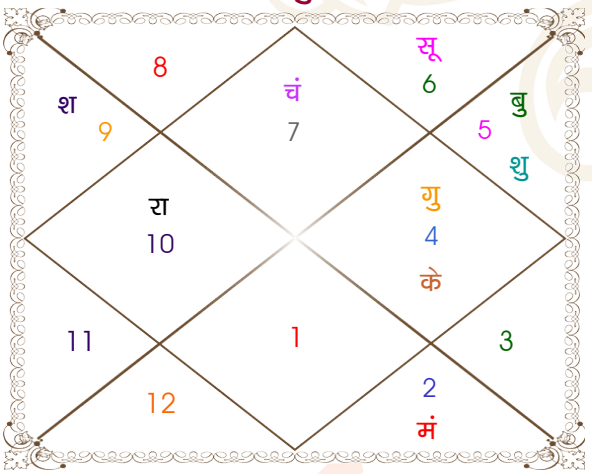

सूर्य कुंडली

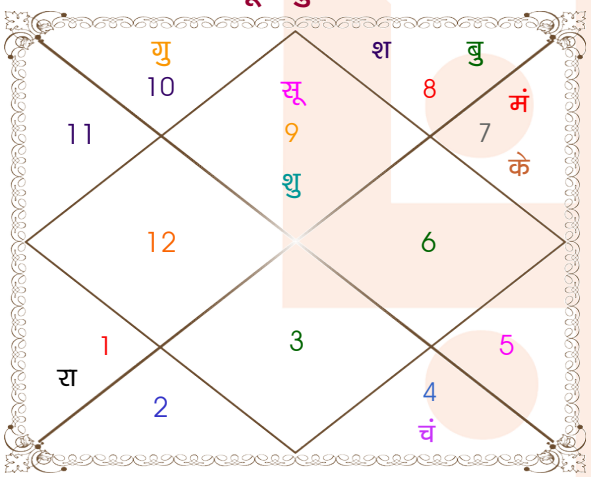

सूर्य कुंडली

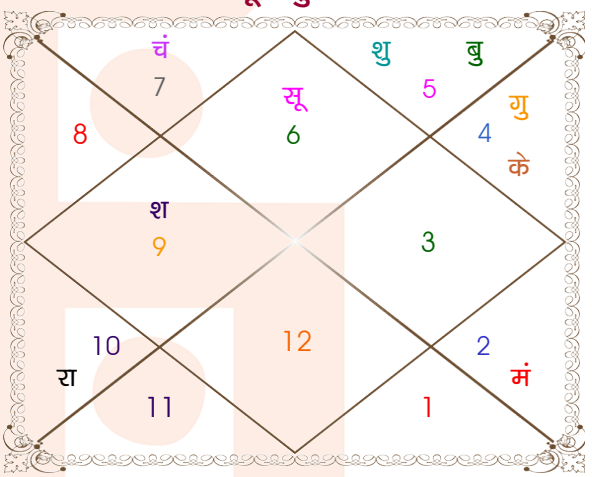

नवमांश कुंडली

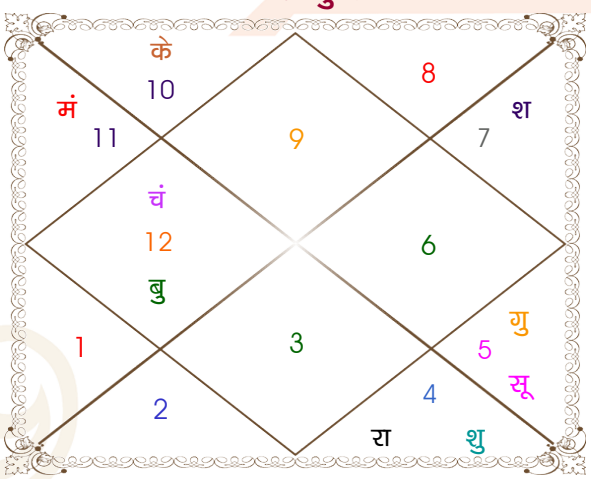

नवमांश कुंडली

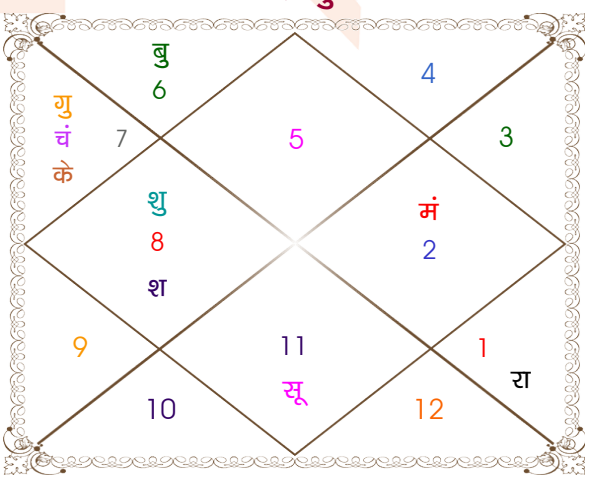

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

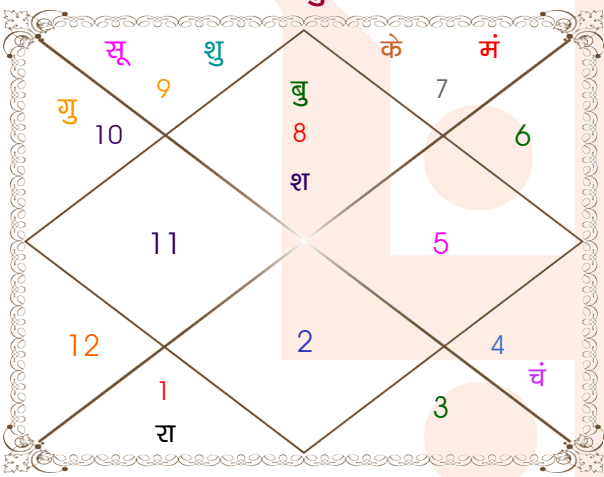

देह विचारः

लग्न कुंडली

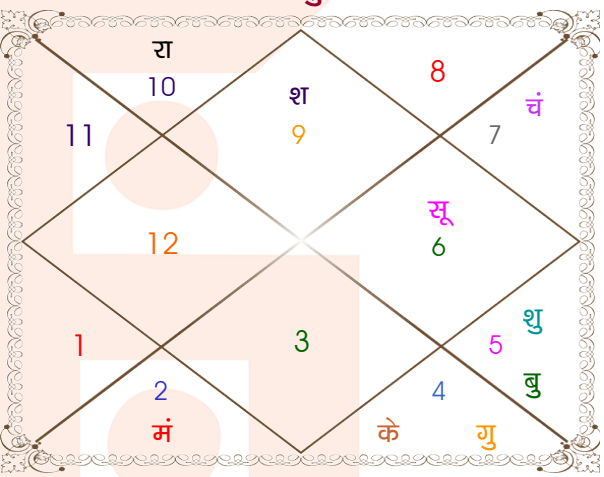

देह विचारः

होरा कुंडली

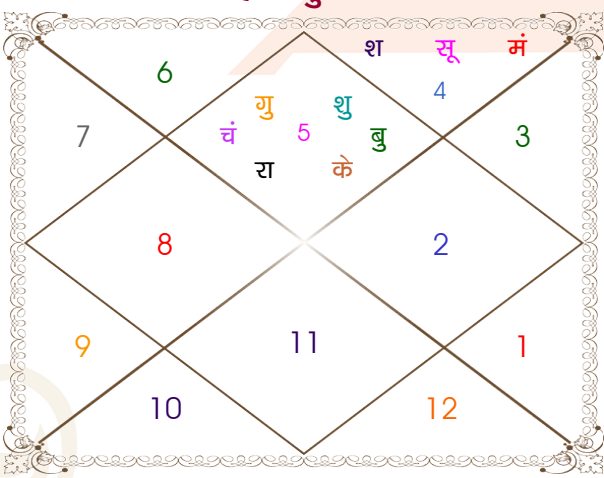

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

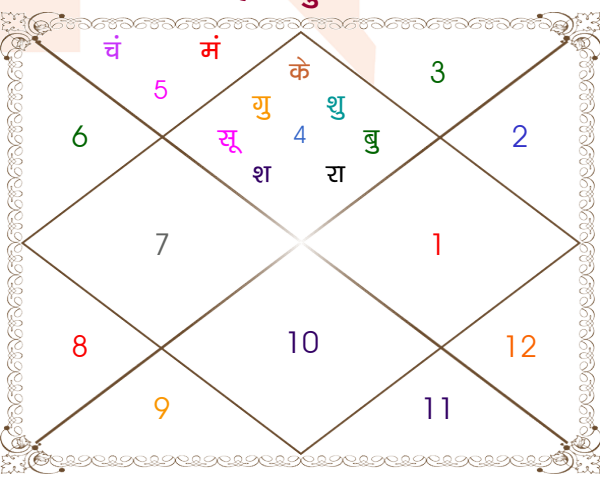

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

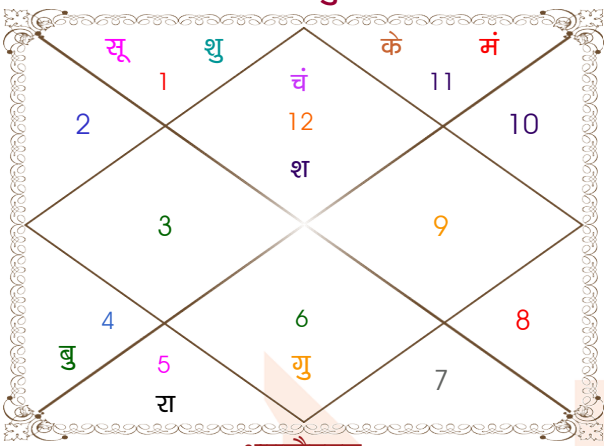

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

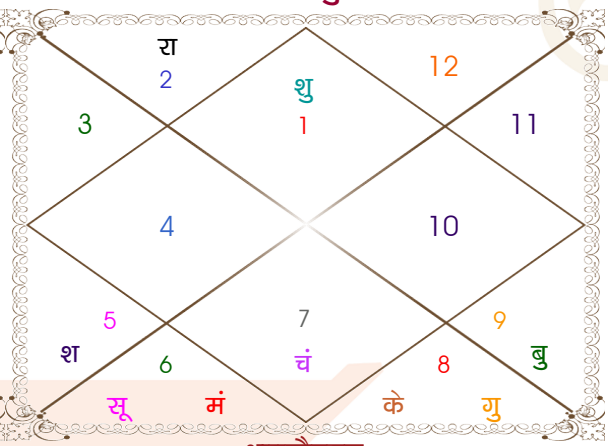

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

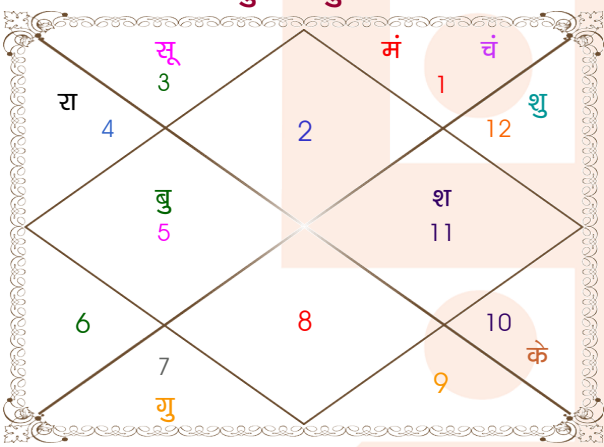

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

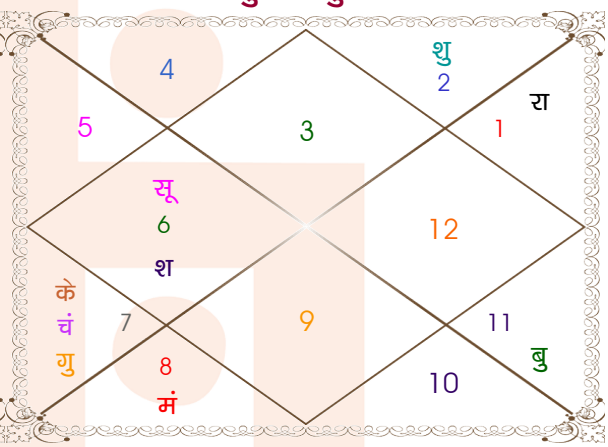

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

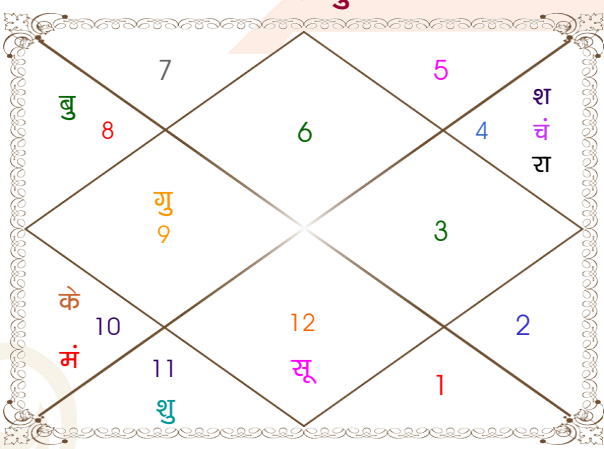

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

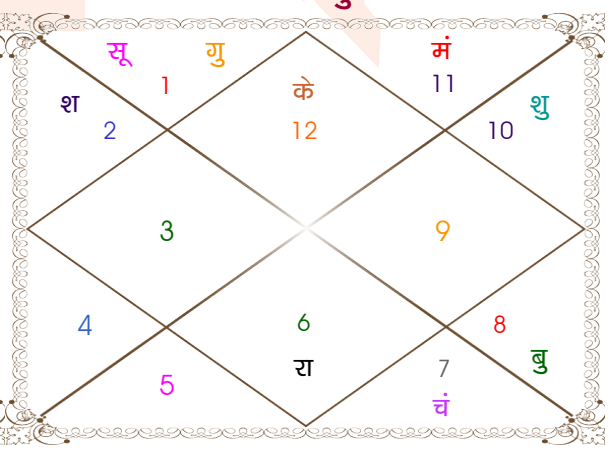

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

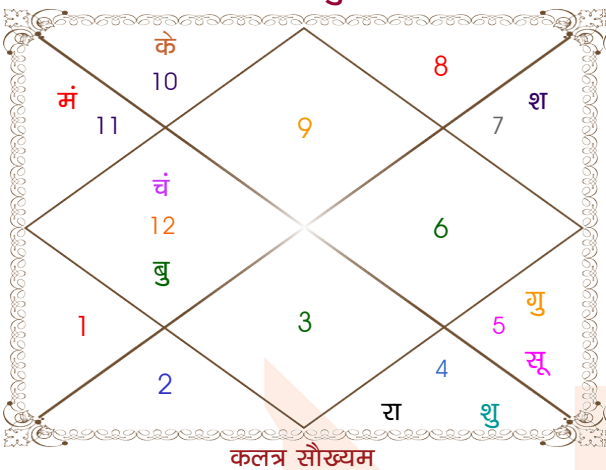

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

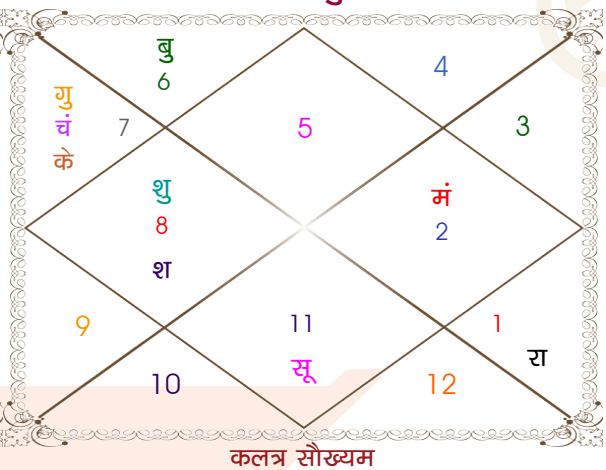

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

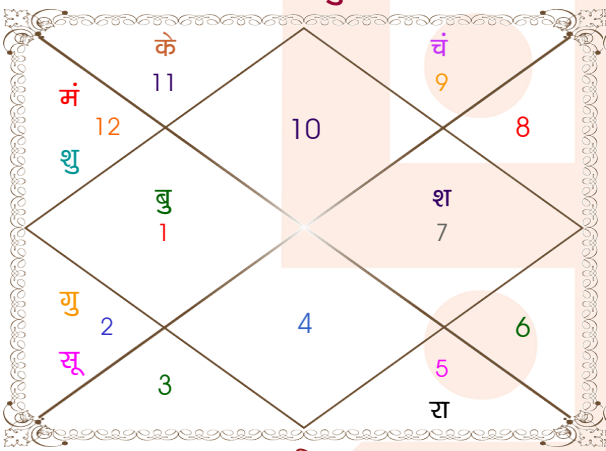

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

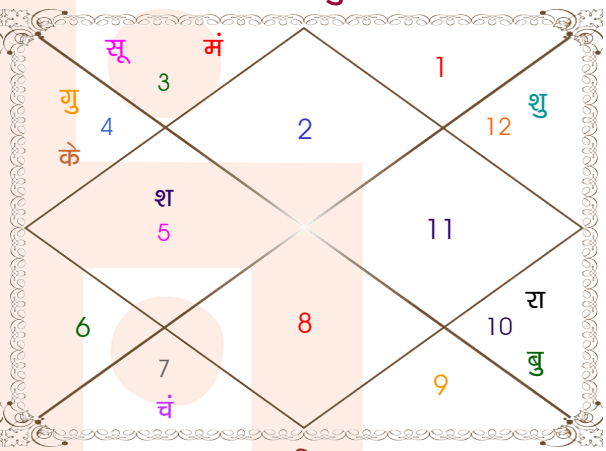

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

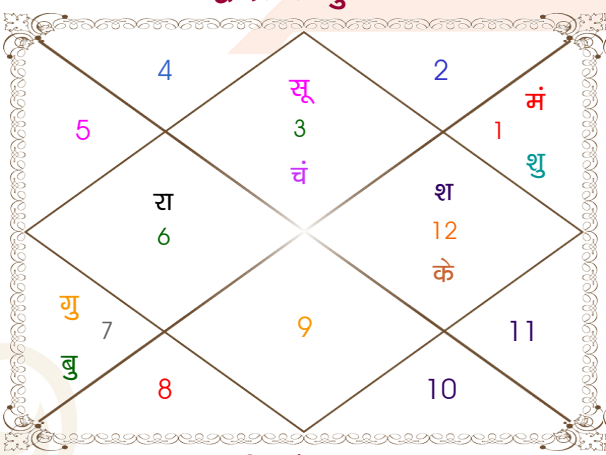

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

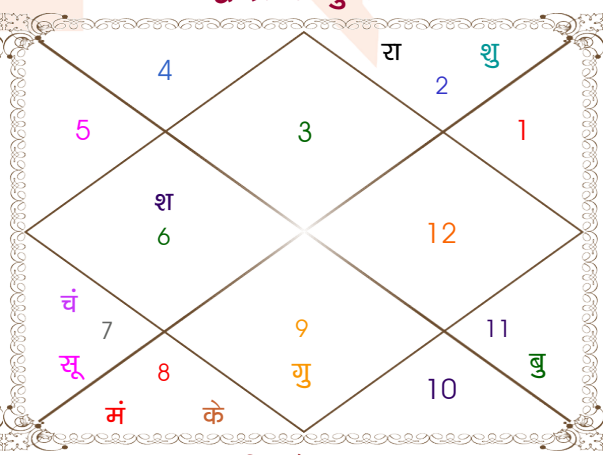

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

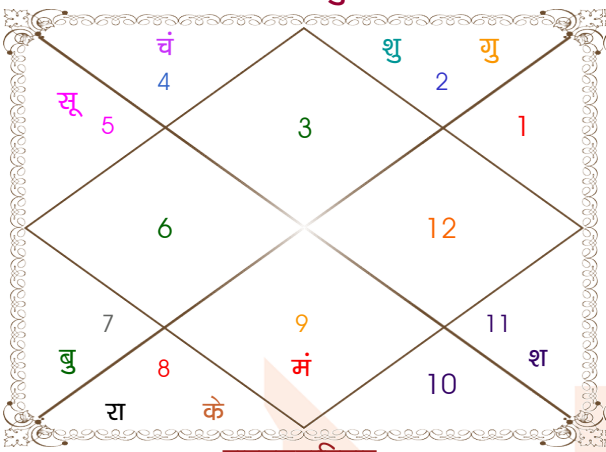

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

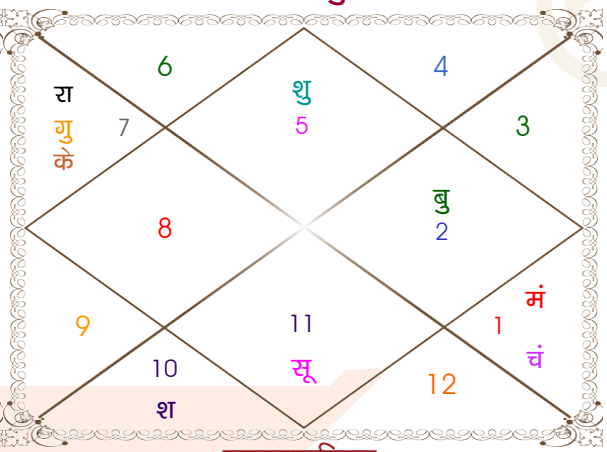

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

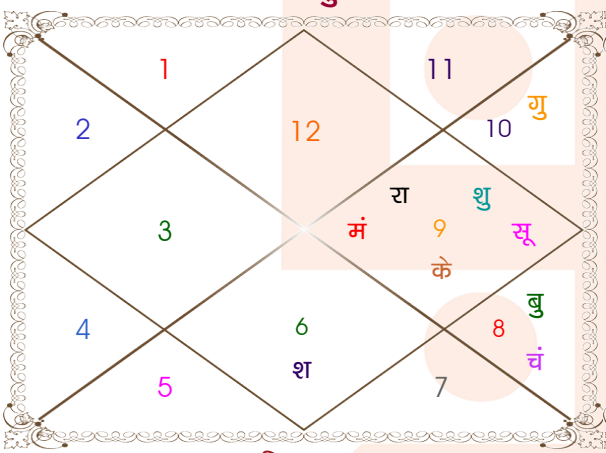

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

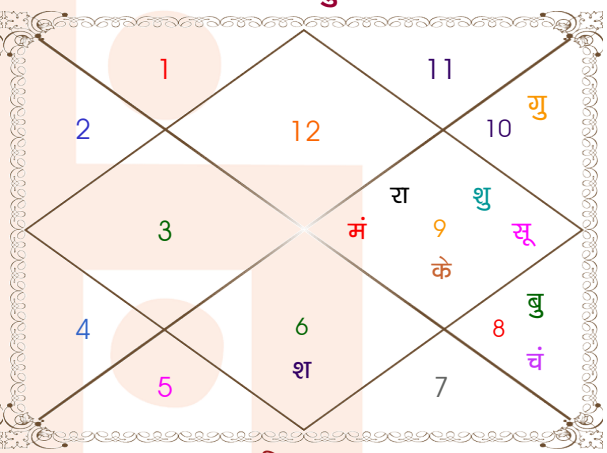

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

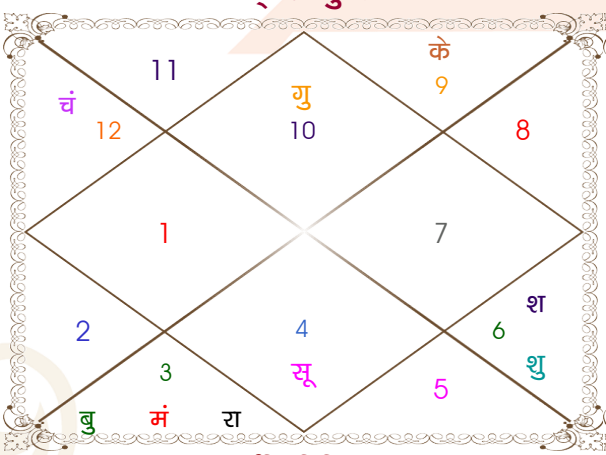

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

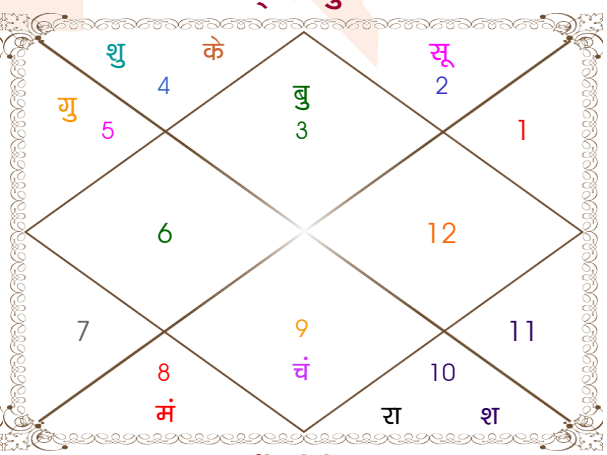

सर्वास्थितिविचारः

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 2 वर्ष 2 मास 19 दिन

के.पी. अयनांश : 23:33:30

फॉरच्युना : कर्क 02:10:36

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	15:34:52	गुरु	शुक्र	सूर्य	सूर्य
चंद्र		कर्क	28:15:35	चंद्र	बुध	शनि	बुध
मंगल		तुला	16:17:47	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
बुध		वृश्चि	27:46:42	मंगल	बुध	गुरु	राहु
गुरु		मक	24:22:54	शनि	मंगल	राहु	राहु
शुक्र		धनु	10:52:43	गुरु	केतु	शनि	राहु
शनि		वृश्चि	11:23:44	मंगल	शनि	चंद्र	गुरु
राहु	व	मेष	13:16:50	मंगल	केतु	बुध	शनि
केतु	व	तुला	13:16:50	शुक्र	राहु	बुध	सूर्य
हर्ष		वृश्चि	25:46:58	मंगल	बुध	राहु	सूर्य
नेप		धनु	09:53:23	गुरु	केतु	शनि	बुध
प्लूटो		तुला	13:13:50	शुक्र	राहु	बुध	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	19:29:53	मंगल	बुध	शुक्र	शुक्र
2	धनु	19:29:23	गुरु	शुक्र	राहु	शुक्र
3	मक	21:42:39	शनि	चंद्र	शुक्र	गुरु
4	कुंभ	25:08:52	शनि	गुरु	बुध	राहु
5	मीन	26:42:48	गुरु	बुध	गुरु	बुध
6	मेष	24:31:02	मंगल	शुक्र	बुध	शुक्र
7	वृष	19:29:53	शुक्र	चंद्र	बुध	शनि
8	मिथु	19:29:23	बुध	राहु	मंगल	शनि
9	कर्क	21:42:39	चंद्र	बुध	सूर्य	राहु
10	सिंह	25:08:52	सूर्य	शुक्र	बुध	राहु
11	कन्या	26:42:48	बुध	मंगल	गुरु	बुध
12	तुला	24:31:02	शुक्र	गुरु	बुध	शुक्र

भाव कुंडली

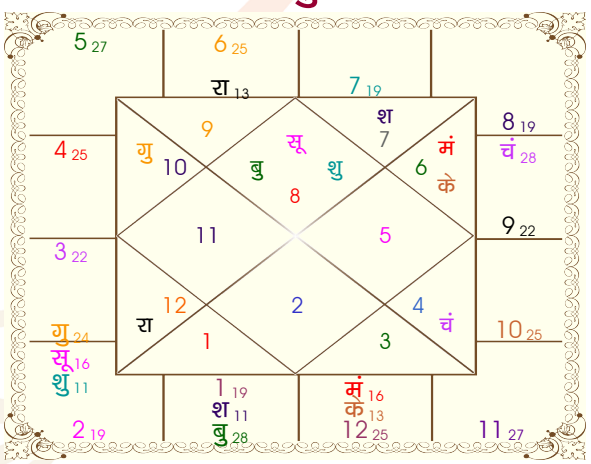

भोग्य दशा काल : मंगल 2 वर्ष 10 मास 0 दिन

के.पी. अयनांश : 23:37:26

फॉरच्युना : मकर 12:05:03

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	04:22:09	बुध	सूर्य	शनि	चंद्र
चंद्र		तुला	01:16:02	शुक्र	मंगल	बुध	राहु
मंगल		वृष	15:14:10	शुक्र	चंद्र	गुरु	चंद्र
बुध		सिंह	17:01:52	सूर्य	शुक्र	चंद्र	केतु
गुरु		कर्क	12:57:09	चंद्र	शनि	राहु	राहु
शुक्र		सिंह	23:37:10	सूर्य	शुक्र	शनि	राहु
शनि	व	धनु	24:58:33	गुरु	शुक्र	बुध	मंगल
राहु	व	मक	12:12:59	शनि	चंद्र	राहु	गुरु
केतु	व	कर्क	12:12:59	चंद्र	शनि	मंगल	राहु
हर्ष		धनु	11:53:15	गुरु	केतु	बुध	शुक्र
नेप	व	धनु	18:04:05	गुरु	शुक्र	मंगल	चंद्र
प्लूटो		तुला	22:08:11	शुक्र	गुरु	शनि	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	15:11:10	गुरु	शुक्र	शुक्र	बुध
2	मक	17:47:09	शनि	चंद्र	बुध	बुध
3	कुंभ	22:35:09	शनि	गुरु	शनि	शुक्र
4	मीन	25:47:59	गुरु	बुध	राहु	सूर्य
5	मेष	24:44:33	मंगल	शुक्र	बुध	सूर्य
6	वृष	20:17:20	शुक्र	चंद्र	केतु	शनि
7	मिथु	15:11:10	बुध	राहु	केतु	बुध
8	कर्क	17:47:09	चंद्र	बुध	बुध	राहु
9	सिंह	22:35:09	सूर्य	शुक्र	शनि	केतु
10	कन्या	25:47:59	बुध	मंगल	राहु	सूर्य
11	तुला	24:44:33	शुक्र	गुरु	बुध	चंद्र
12	वृश्चि	20:17:20	मंगल	बुध	शुक्र	राहु

भाव कुंडली

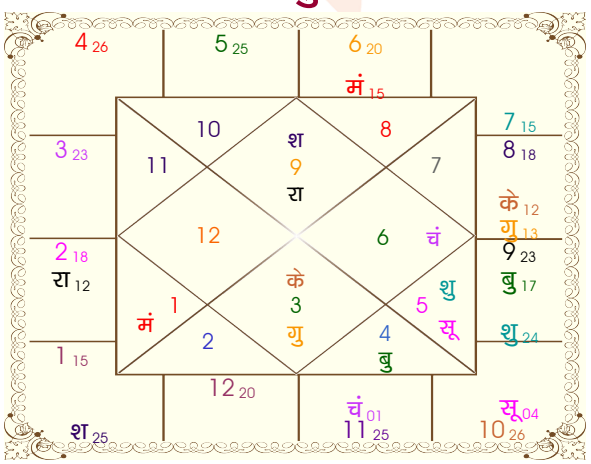

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य+ चंद्र, मंगल- बुध+ गुरु- शुक्र,
2	गुरु-
3	गुरु, शनि,
4	शनि,
5	मंगल, गुरु- राहु, केतु,
6	मंगल- गुरु-
7	सूर्य- शुक्र-
8	चंद्र- बुध,
9	चंद्र,
10	सूर्य-
11	चंद्र- मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, राहु, केतु,
12	सूर्य- शुक्र- शनि+

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	गुरु+ शनि, राहु, केतु,
2	गुरु- शनि- केतु-
3	गुरु- शनि- केतु-
4	गुरु-
5	चंद्र+ मंगल,
6	बुध- शुक्र, शनि-
7	बुध- गुरु, केतु,
8	चंद्र- मंगल- बुध, राहु-
9	सूर्य+ बुध, शुक्र+ शनि,
10	चंद्र, मंगल, बुध- राहु,
11	बुध- शुक्र, शनि-
12	चंद्र- मंगल-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1+ 7- 10- 12-
चंद्र	1, 8- 9, 11-
मंगल	1- 5, 6- 11,
बुध	1+ 8, 11,
गुरु	1- 2- 3, 5- 6- 11,
शुक्र	1, 7- 11, 12-
शनि	3, 4, 12+
राहु	5, 11,
केतु	5, 11,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	9+
चंद्र	5+ 8- 10, 12-
मंगल	5, 8- 10, 12-
बुध	6- 7- 8, 9, 10- 11-
गुरु	1+ 2- 3- 4- 7,
शुक्र	6, 9+ 11,
शनि	1, 2- 3- 6- 9, 11-
राहु	1, 8- 10,
केतु	1, 2- 3- 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	शनि

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	बुध

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

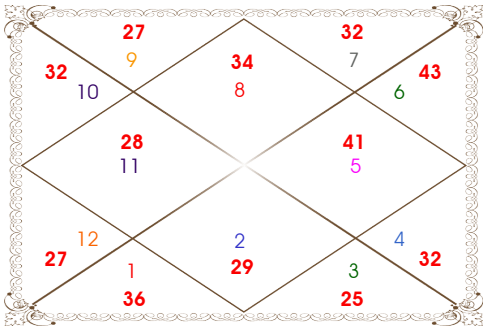

सर्वाष्टकवर्ग

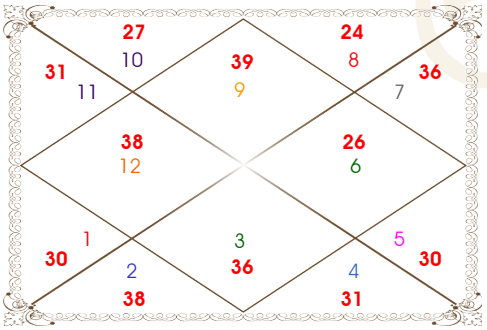

Pradeep

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	3	3	3	3	6	3	3	4	3	2	3	39
गुरु	6	4	1	5	7	4	5	5	3	6	4	6	56
मंगल	4	5	2	3	3	5	4	5	2	3	2	1	39
सूर्य	4	5	5	4	5	6	4	4	3	4	2	2	48
शुक्र	2	2	4	6	5	7	4	4	3	4	5	6	52
बुध	6	4	4	4	8	3	5	6	5	3	4	2	54
चंद्र	5	3	4	4	5	6	3	3	3	5	4	4	49
लग्न	6	3	2	3	5	6	4	4	4	4	5	3	49
बिन्दु	36	29	25	32	41	43	32	34	27	32	28	27	386
रेखा	28	35	39	32	23	21	32	30	37	32	36	37	382

Vishaka

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	2	5	3	4	5	4	5	4	5	2	4	6	49
सूर्य	2	5	4	5	3	3	4	3	6	4	3	6	48
चंद्र	5	5	5	4	2	2	7	3	3	2	7	4	49
मंगल	1	3	6	3	3	2	3	2	6	3	3	4	39
बुध	2	6	5	5	6	3	4	3	6	6	3	5	54
गुरु	7	7	6	2	5	5	3	5	5	4	4	3	56
शुक्र	7	3	3	4	5	4	6	3	4	4	4	5	52
शनि	4	4	4	4	1	3	4	1	4	2	3	5	39
बिन्दु	30	38	36	31	30	26	36	24	39	27	31	38	386
रेखा	34	26	28	33	34	38	28	40	25	37	33	26	382

शोध्य पिंड - Pradeep

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	70	84	73	74	77	133	94	29
ग्रह पिंड	36	46	25	66	58	52	42	20
शोध्य पिंड	106	130	98	140	135	185	136	49

शोध्य पिंड - Vishaka

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	122	94	100	108	152	96	85	128
ग्रह पिंड	95	73	49	67	117	29	42	71
शोध्य पिंड	217	167	149	175	269	125	127	199

विंशोत्तरी दशा

बुध 2 वर्ष 2 मास 19 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
31/12/1985		20/03/1988		21/03/1995	
20/03/1988		21/03/1995		21/03/2015	
00/00/0000	केतु	16/08/1988	शुक्र	20/07/1998	
00/00/0000	शुक्र	16/10/1989	सूर्य	21/07/1999	
00/00/0000	सूर्य	21/02/1990	चंद्र	20/03/2001	
00/00/0000	चंद्र	22/09/1990	मंगल	21/05/2002	
00/00/0000	मंगल	18/02/1991	राहु	20/05/2005	
00/00/0000	राहु	08/03/1992	गुरु	19/01/2008	
00/00/0000	गुरु	12/02/1993	शनि	21/03/2011	
31/12/1985	शनि	24/03/1994	बुध	19/01/2014	
शनि	20/03/1988	बुध	21/03/1995	केतु	21/03/2015

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
21/03/2015		20/03/2021		21/03/2031	
20/03/2021		21/03/2031		21/03/2038	
सूर्य	08/07/2015	चंद्र	19/01/2022	मंगल	17/08/2031
चंद्र	07/01/2016	मंगल	20/08/2022	राहु	04/09/2032
मंगल	14/05/2016	राहु	19/02/2024	गुरु	10/08/2033
राहु	08/04/2017	गुरु	20/06/2025	शनि	19/09/2034
गुरु	25/01/2018	शनि	19/01/2027	बुध	16/09/2035
शनि	07/01/2019	बुध	19/06/2028	केतु	13/02/2036
बुध	13/11/2019	केतु	19/01/2029	शुक्र	14/04/2037
केतु	20/03/2020	शुक्र	19/09/2030	सूर्य	20/08/2037
शुक्र	20/03/2021	सूर्य	21/03/2031	चंद्र	21/03/2038

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
21/03/2038		20/03/2056		20/03/2072	
20/03/2056		20/03/2072		21/03/2091	
राहु	01/12/2040	गुरु	08/05/2058	शनि	24/03/2075
गुरु	26/04/2043	शनि	19/11/2060	बुध	01/12/2077
शनि	02/03/2046	बुध	25/02/2063	केतु	10/01/2079
बुध	19/09/2048	केतु	31/01/2064	शुक्र	12/03/2082
केतु	07/10/2049	शुक्र	01/10/2066	सूर्य	22/02/2083
शुक्र	07/10/2052	सूर्य	21/07/2067	चंद्र	22/09/2084
सूर्य	01/09/2053	चंद्र	19/11/2068	मंगल	01/11/2085
चंद्र	03/03/2055	मंगल	26/10/2069	राहु	07/09/2088
मंगल	20/03/2056	राहु	20/03/2072	गुरु	21/03/2091

मंगल 2 वर्ष 10 मास 0 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
21/09/1990		22/07/1993		23/07/2011	
22/07/1993		23/07/2011		23/07/2027	
00/00/0000	राहु	04/04/1996	गुरु	09/09/2013	
00/00/0000	गुरु	28/08/1998	शनि	22/03/2016	
00/00/0000	शनि	04/07/2001	बुध	28/06/2018	
21/09/1990	बुध	22/01/2004	केतु	04/06/2019	
बुध	18/01/1991	केतु	08/02/2005	शुक्र	02/02/2022
केतु	16/06/1991	शुक्र	09/02/2008	सूर्य	21/11/2022
शुक्र	16/08/1992	सूर्य	03/01/2009	चंद्र	22/03/2024
सूर्य	21/12/1992	चंद्र	04/07/2010	मंगल	26/02/2025
चंद्र	22/07/1993	मंगल	23/07/2011	राहु	23/07/2027

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
23/07/2027		23/07/2046		23/07/2063	
23/07/2046		23/07/2063		23/07/2070	
शनि	26/07/2030	बुध	18/12/2048	केतु	19/12/2063
बुध	04/04/2033	केतु	16/12/2049	शुक्र	17/02/2065
केतु	14/05/2034	शुक्र	15/10/2052	सूर्य	25/06/2065
शुक्र	13/07/2037	सूर्य	22/08/2053	चंद्र	24/01/2066
सूर्य	25/06/2038	चंद्र	21/01/2055	मंगल	22/06/2066
चंद्र	25/01/2040	मंगल	19/01/2056	राहु	11/07/2067
मंगल	04/03/2041	राहु	07/08/2058	गुरु	16/06/2068
राहु	09/01/2044	गुरु	12/11/2060	शनि	25/07/2069
गुरु	23/07/2046	शनि	23/07/2063	बुध	23/07/2070

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
23/07/2070		23/07/2090		22/07/2096	
23/07/2090		22/07/2096		24/07/2106	
शुक्र	21/11/2073	सूर्य	09/11/2090	चंद्र	23/05/2097
सूर्य	21/11/2074	चंद्र	11/05/2091	मंगल	22/12/2097
चंद्र	22/07/2076	मंगल	16/09/2091	राहु	23/06/2099
मंगल	21/09/2077	राहु	09/08/2092	गुरु	23/10/2100
राहु	21/09/2080	गुरु	29/05/2093	शनि	24/05/2102
गुरु	23/05/2083	शनि	11/05/2094	बुध	23/10/2103
शनि	23/07/2086	बुध	17/03/2095	केतु	23/05/2104
बुध	23/05/2089	केतु	23/07/2095	शुक्र	22/01/2106
केतु	23/07/2090	शुक्र	22/07/2096	सूर्य	24/07/2106

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
25/01/2018		07/01/2019		13/11/2019	
07/01/2019		13/11/2019		20/03/2020	
शनि	21/03/2018	बुध	20/02/2019	केतु	21/11/2019
बुध	09/05/2018	केतु	10/03/2019	शुक्र	12/12/2019
केतु	29/05/2018	शुक्र	01/05/2019	सूर्य	18/12/2019
शुक्र	26/07/2018	सूर्य	16/05/2019	चंद्र	29/12/2019
सूर्य	12/08/2018	चंद्र	11/06/2019	मंगल	06/01/2020
चंद्र	10/09/2018	मंगल	29/06/2019	राहु	25/01/2020
मंगल	01/10/2018	राहु	15/08/2019	गुरु	11/02/2020
राहु	22/11/2018	गुरु	25/09/2019	शनि	02/03/2020
गुरु	07/01/2019	शनि	13/11/2019	बुध	20/03/2020

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
22/03/2016		28/06/2018		04/06/2019	
28/06/2018		04/06/2019		02/02/2022	
बुध	18/07/2016	केतु	18/07/2018	शुक्र	14/11/2019
केतु	04/09/2016	शुक्र	13/09/2018	सूर्य	01/01/2020
शुक्र	20/01/2017	सूर्य	30/09/2018	चंद्र	22/03/2020
सूर्य	02/03/2017	चंद्र	28/10/2018	मंगल	18/05/2020
चंद्र	10/05/2017	मंगल	17/11/2018	राहु	11/10/2020
मंगल	28/06/2017	राहु	08/01/2019	गुरु	18/02/2021
राहु	30/10/2017	गुरु	22/02/2019	शनि	22/07/2021
गुरु	17/02/2018	शनि	17/04/2019	बुध	07/12/2021
शनि	28/06/2018	बुध	04/06/2019	केतु	02/02/2022

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
20/03/2020		20/03/2021		19/01/2022	
20/03/2021		19/01/2022		20/08/2022	
शुक्र	20/05/2020	चंद्र	15/04/2021	मंगल	31/01/2022
सूर्य	07/06/2020	मंगल	03/05/2021	राहु	04/03/2022
चंद्र	08/07/2020	राहु	17/06/2021	गुरु	02/04/2022
मंगल	29/07/2020	गुरु	28/07/2021	शनि	05/05/2022
राहु	22/09/2020	शनि	14/09/2021	बुध	04/06/2022
गुरु	10/11/2020	बुध	27/10/2021	केतु	17/06/2022
शनि	06/01/2021	केतु	14/11/2021	शुक्र	22/07/2022
बुध	27/02/2021	शुक्र	04/01/2022	सूर्य	02/08/2022
केतु	20/03/2021	सूर्य	19/01/2022	चंद्र	20/08/2022

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
02/02/2022		21/11/2022		22/03/2024	
21/11/2022		22/03/2024		26/02/2025	
सूर्य	17/02/2022	चंद्र	01/01/2023	मंगल	11/04/2024
चंद्र	13/03/2022	मंगल	29/01/2023	राहु	01/06/2024
मंगल	30/03/2022	राहु	12/04/2023	गुरु	17/07/2024
राहु	13/05/2022	गुरु	16/06/2023	शनि	09/09/2024
गुरु	21/06/2022	शनि	02/09/2023	बुध	27/10/2024
शनि	06/08/2022	बुध	10/11/2023	केतु	16/11/2024
बुध	17/09/2022	केतु	08/12/2023	शुक्र	12/01/2025
केतु	04/10/2022	शुक्र	27/02/2024	सूर्य	29/01/2025
शुक्र	21/11/2022	सूर्य	22/03/2024	चंद्र	26/02/2025

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
20/08/2022		19/02/2024		20/06/2025	
19/02/2024		20/06/2025		19/01/2027	
राहु	10/11/2022	गुरु	24/04/2024	शनि	19/09/2025
गुरु	22/01/2023	शनि	10/07/2024	बुध	10/12/2025
शनि	19/04/2023	बुध	17/09/2024	केतु	13/01/2026
बुध	05/07/2023	केतु	15/10/2024	शुक्र	19/04/2026
केतु	06/08/2023	शुक्र	04/01/2025	सूर्य	18/05/2026
शुक्र	06/11/2023	सूर्य	29/01/2025	चंद्र	05/07/2026
सूर्य	03/12/2023	चंद्र	10/03/2025	मंगल	08/08/2026
चंद्र	18/01/2024	मंगल	08/04/2025	राहु	03/11/2026
मंगल	19/02/2024	राहु	20/06/2025	गुरु	19/01/2027

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
26/02/2025		23/07/2027		26/07/2030	
23/07/2027		26/07/2030		04/04/2033	
राहु	08/07/2025	शनि	13/01/2028	बुध	12/12/2030
गुरु	02/11/2025	बुध	17/06/2028	केतु	07/02/2031
शनि	21/03/2026	केतु	20/08/2028	शुक्र	21/07/2031
बुध	23/07/2026	शुक्र	19/02/2029	सूर्य	08/09/2031
केतु	12/09/2026	सूर्य	15/04/2029	चंद्र	29/11/2031
शुक्र	05/02/2027	चंद्र	15/07/2029	मंगल	26/01/2032
सूर्य	21/03/2027	मंगल	17/09/2029	राहु	21/06/2032
चंद्र	02/06/2027	राहु	01/03/2030	गुरु	30/10/2032
मंगल	23/07/2027	गुरु	26/07/2030	शनि	04/04/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
19/01/2027		19/06/2028		19/01/2029	
19/06/2028		19/01/2029		19/09/2030	
बुध	02/04/2027	केतु	02/07/2028	शुक्र	30/04/2029
केतु	03/05/2027	शुक्र	06/08/2028	सूर्य	30/05/2029
शुक्र	28/07/2027	सूर्य	17/08/2028	चंद्र	20/07/2029
सूर्य	23/08/2027	चंद्र	04/09/2028	मंगल	25/08/2029
चंद्र	05/10/2027	मंगल	16/09/2028	राहु	24/11/2029
मंगल	04/11/2027	राहु	18/10/2028	गुरु	13/02/2030
राहु	21/01/2028	गुरु	16/11/2028	शनि	21/05/2030
गुरु	30/03/2028	शनि	19/12/2028	बुध	15/08/2030
शनि	19/06/2028	बुध	19/01/2029	केतु	19/09/2030

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
04/04/2033		14/05/2034		13/07/2037	
14/05/2034		13/07/2037		25/06/2038	
केतु	27/04/2033	शुक्र	22/11/2034	सूर्य	31/07/2037
शुक्र	04/07/2033	सूर्य	19/01/2035	चंद्र	29/08/2037
सूर्य	24/07/2033	चंद्र	26/04/2035	मंगल	18/09/2037
चंद्र	27/08/2033	मंगल	02/07/2035	राहु	09/11/2037
मंगल	20/09/2033	राहु	23/12/2035	गुरु	25/12/2037
राहु	19/11/2033	गुरु	25/05/2036	शनि	18/02/2038
गुरु	12/01/2034	शनि	24/11/2036	बुध	08/04/2038
शनि	17/03/2034	बुध	07/05/2037	केतु	28/04/2038
बुध	14/05/2034	केतु	13/07/2037	शुक्र	25/06/2038

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
19/09/2030		21/03/2031		17/08/2031	
21/03/2031		17/08/2031		04/09/2032	
सूर्य	28/09/2030	मंगल	30/03/2031	राहु	14/10/2031
चंद्र	14/10/2030	राहु	21/04/2031	गुरु	04/12/2031
मंगल	24/10/2030	गुरु	11/05/2031	शनि	02/02/2032
राहु	21/11/2030	शनि	03/06/2031	बुध	28/03/2032
गुरु	15/12/2030	बुध	25/06/2031	केतु	19/04/2032
शनि	13/01/2031	केतु	03/07/2031	शुक्र	22/06/2032
बुध	08/02/2031	शुक्र	28/07/2031	सूर्य	11/07/2032
केतु	18/02/2031	सूर्य	05/08/2031	चंद्र	12/08/2032
शुक्र	21/03/2031	चंद्र	17/08/2031	मंगल	04/09/2032

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
25/06/2038		25/01/2040		04/03/2041	
25/01/2040		04/03/2041		09/01/2044	
चंद्र	12/08/2038	मंगल	17/02/2040	राहु	08/08/2041
मंगल	15/09/2038	राहु	18/04/2040	गुरु	24/12/2041
राहु	11/12/2038	गुरु	11/06/2040	शनि	07/06/2042
गुरु	26/02/2039	शनि	14/08/2040	बुध	02/11/2042
शनि	29/05/2039	बुध	10/10/2040	केतु	01/01/2043
बुध	19/08/2039	केतु	03/11/2040	शुक्र	24/06/2043
केतु	21/09/2039	शुक्र	09/01/2041	सूर्य	15/08/2043
शुक्र	27/12/2039	सूर्य	30/01/2041	चंद्र	10/11/2043
सूर्य	25/01/2040	चंद्र	04/03/2041	मंगल	09/01/2044

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
04/09/2032		10/08/2033		19/09/2034	
10/08/2033		19/09/2034		16/09/2035	
गुरु	19/10/2032	शनि	14/10/2033	बुध	10/11/2034
शनि	12/12/2032	बुध	10/12/2033	केतु	01/12/2034
बुध	29/01/2033	केतु	03/01/2034	शुक्र	30/01/2035
केतु	18/02/2033	शुक्र	11/03/2034	सूर्य	17/02/2035
शुक्र	16/04/2033	सूर्य	31/03/2034	चंद्र	19/03/2035
सूर्य	03/05/2033	चंद्र	04/05/2034	मंगल	10/04/2035
चंद्र	31/05/2033	मंगल	28/05/2034	राहु	03/06/2035
मंगल	20/06/2033	राहु	27/07/2034	गुरु	21/07/2035
राहु	10/08/2033	गुरु	19/09/2034	शनि	16/09/2035

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
09/01/2044		23/07/2046		18/12/2048	
23/07/2046		18/12/2048		16/12/2049	
गुरु	12/05/2044	बुध	24/11/2046	केतु	08/01/2049
शनि	05/10/2044	केतु	15/01/2047	शुक्र	10/03/2049
बुध	13/02/2045	शुक्र	10/06/2047	सूर्य	28/03/2049
केतु	08/04/2045	सूर्य	24/07/2047	चंद्र	27/04/2049
शुक्र	10/09/2045	चंद्र	06/10/2047	मंगल	18/05/2049
सूर्य	26/10/2045	मंगल	26/11/2047	राहु	12/07/2049
चंद्र	11/01/2046	राहु	06/04/2048	गुरु	29/08/2049
मंगल	06/03/2046	गुरु	01/08/2048	शनि	25/10/2049
राहु	23/07/2046	शनि	18/12/2048	बुध	16/12/2049

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

4	मूलांक	3
3	भाग्यांक	4
1, 4, 6, 3	मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
7, 8	शत्रु अंक	1, 8
22,31,40,49,58	शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
रवि, सोम, मंगल	शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मीन, मेष	मित्र राशि	मकर, मिथुन
कुम्भ, कर्क, कन्या	मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
शिव	अनुकूल देवता	लक्ष्मी
मूंगा	शुभ रत्न	पुखराज
संगमूंगी	शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
मोती	भाग्य रत्न	माणिक्य
ताम्र	शुभ धातु	कांसा
रक्त	शुभ रंग	पीत
दक्षिण	शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	संध्या
केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन	दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
मल्का	दान अन्न	दाल चना
घी	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Pradeep

जीवन रत्नः	मूंगा	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मोती	भाग्योदय
कारक रत्नः	माणिक्य	धन, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्नः	पुखराज	पराक्रम, धन, सन्तति सुख

Vishaka

जीवन रत्नः	पुखराज	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	माणिक्य	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख, कम खर्च

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/1993-10/08/1995
साढेसाती प्रथम ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-02/11/2014

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/07/2022-24/03/2025
साढेसाती प्रथम ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती तृतीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/02/2052-09/09/2054
साढेसाती प्रथम ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती तृतीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बदनामी
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	व्यावसायिक परेशानी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	कम खर्च

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/09/1990-06/03/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	व्यावसाय
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	व्यय

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Pradeep

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक यात्रा बहुत करता है पर आंशिक रूप में ही सफलता मिलती है। कभी रोग व्याधि जातक के शरीर में लग जाती है, जिसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक का जीवन मानसिक रूप से थोड़ा बहुत परेशान रहता है एवं शोक दुःख आदि भी घेर लेता है। जातक को प्रेम प्रसंग में विशेष रूप से सफलता नहीं मिलती है। मनोभिलाषित पत्नी प्रायः नहीं मिलती। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का चरित्र थोड़ा सन्देहास्पद रहता है। जातक के मन में आंशिक रूप से निराशा की भावना जागृत हो उठती है और अपने मन में दूसरों के प्रति शत्रुता पालकर रखने वाला होता है। धर्म की आंशिक क्षति होती है। जातक कभी-कभी बुरा स्वप्न भी देखता है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक राजदण्ड का कभी भागीदार बन जाता है। जातक का जीवन शत्रुओं के षड्यन्त्र से घिरा रहता है और उस षड्यन्त्र में आंशिक रूप से शत्रुओं की विजय होती है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को थलसेना में नहीं जाना विशेष रूप से हितकर है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक एक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत करने वाला तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Vishaka

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मार्जार	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कर्क	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.00		

कुल : **25 / 36**

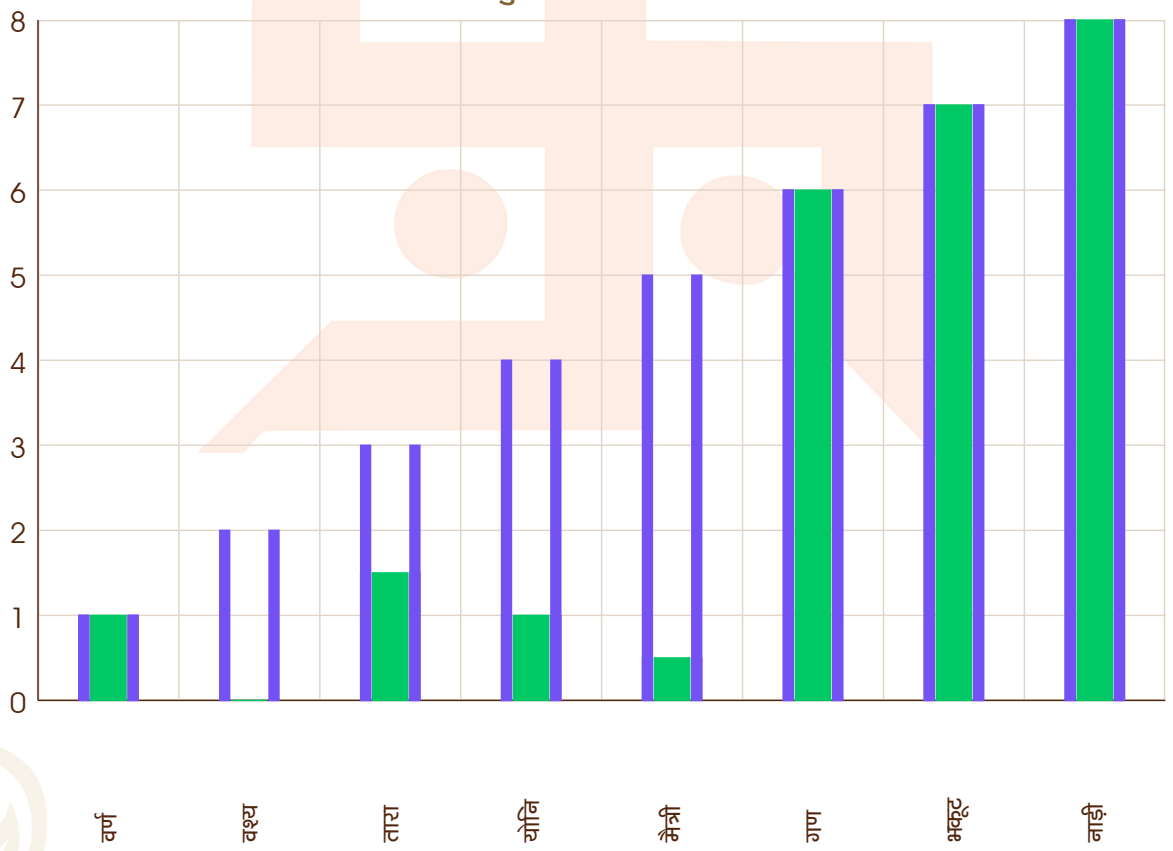

अष्टकूट मिलान

Pradeep का वर्ग श्वान है तथा Vishaka का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Pradeep और Vishaka का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Pradeep मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Pradeep कि कुण्डली में द्वादश भाव में तुला राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Vishaka मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Vishaka कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Pradeep तथा Vishaka में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Pradeep का वर्ण ब्राह्मण तथा Vishaka का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। Vishaka सभी को मान एवं प्रतिष्ठा देती है तथा सेवा करती रहेंगी। साथ ही वह सबकी अपेक्षाओं को पूरा करती रहेंगी तथा किसी के भी साथ तर्क-वितर्क नहीं करेंगी। Vishaka एक नर्स की भाँति अपने पति एवं बच्चों की सेवा एवं तिमारदारी करती रहेंगी।

वश्य

Pradeep का वश्य जलचर है एवं Vishaka का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है। जिसके कारण यह मिलान मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जलचर कभी भी मनुष्य के ऊपर नियंत्रण स्थापित नहीं कर सकता। इसके विपरीत, मनुष्य या तो जलचरों पर नियंत्रण कर लेता है अथवा उसे समाप्त कर देता है अथवा उसका भक्षण कर लेता है अथवा उससे दूर भागता है। अतः यदि इन दोनों बीच विवाह सम्पन्न होता है तो यह अनुकूल नहीं रहेगा। इस स्थिति में Vishaka अति हावी होती रहेगी तथा हमेशा अपने पति को गुलाम समझती रहेगी तथा चाहेगी कि Pradeep उसकी आज्ञा का पालन करे। इससे घर की शांति भंग होगी तथा प्रगति एवं समृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

तारा

Pradeep की तारा प्रत्यरि तथा Vishaka की तारा साधक है। Pradeep की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत Pradeep कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप Vishaka को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

Pradeep की योनि मार्जार है तथा Vishaka की योनि व्याघ्र है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से

उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Pradeep का राशि स्वामी Vishaka के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि Vishaka का राशि स्वामी Pradeep के राशि स्वामी के साथ शत्रु का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए सम किंतु दूसरा उसे शत्रु मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

Pradeep का गण राक्षस है तथा Vishaka का गण भी राक्षस है। अर्थात Vishaka का गण Pradeep के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण Pradeep एवं Vishaka दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श साबित होंगे।

भकूट

Pradeep से Vishaka की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है तथा Vishaka से Pradeep की राशि दशम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण Pradeep परिश्रमी एवं अपने व्यवसाय में काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय में लगन, निष्ठा एवं मेहनत के कारण उन्हें सभी से प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर Vishaka घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवं सब का ध्यान रखने तथा बड़ों को सम्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के सदस्यों की आंखों का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, सहयोग एवं सामंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

Pradeep की नाड़ी अन्त्य है तथा Vishaka की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Pradeep की जन्म राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है तथा Vishaka की वायुतत्व युक्त तुला राशि है। जलतत्व एवं वायुतत्व में नैसर्गिक विषमता तथा शत्रुता का भाव होने के कारण Pradeep और Vishaka के मध्य स्वभावगत असमानताएं रहेगी जिससे मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा।

Pradeep और Vishaka की जन्म राशियां परस्पर शत्रु एवं सम भाव में पड़ती है। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति अच्छी नहीं है। इसके प्रभाव से उनके मध्य मतभेद तथा वैमनस्य का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे जिससे वाद विवाद में बुद्धि होगी तथा परस्पर संबधों में मधुरता की अपेक्षा तनाव का भाव उत्पन्न होगा। यदि सामंजस्य से कार्य किया जाय तो उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता हो सकती है।

Pradeep और Vishaka की राशियां परस्पर चतुर्थ एवं दशम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से Pradeep और Vishaka एक दूसरे के प्रति सहयोग सम्मान एवं सहानुभूति का भाव रखेंगे। तथा मन में आकर्षण भी रहेगा। इससे उपरोक्त अशुभ प्रभावों में भी न्यूनता आएगी। Vishaka की प्रवृति गृह कार्यो के प्रति अधिक रहेगी तथा घर एवं बच्चों के प्रति पूर्ण ध्यान रखेंगी फलतः दाम्पत्य संबधों में मधुरता की वृद्धि होगी तथा सुख पूर्वक जीवन व्यतीत होगा।

Pradeep का वश्य जलचर एवं Vishaka का वश्य मानव है। मानव तथा जलचर के मध्य नैसर्गिक भिन्नता होने के कारण Pradeep और Vishaka की अभिरूचियों में अंतर रहेगा। साथ ही शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक विषमता भी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त एक दुसरे की काम भावनाओं की शांति एवं सन्तुष्टि में भी असमर्थ से रहेंगे।

Pradeep का वर्ण ब्राह्मण तथा Vishaka का वर्ण शूद्र है। अतः दोनों की कार्य क्षमता में भी असमानता रहेगी। Pradeep शैक्षणिक क्षेत्र शास्त्रीय तथा धार्मिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे। Vishaka की प्रवृति परिश्रम एवं ईमानदारी से किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगी।

धन

Pradeep और Vishaka की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिन Pradeep पर मंगल का अशुभ प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते है। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

इसके अतिरिक्त Pradeep की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी होगी जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की इस

प्रवृति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

Pradeep की नाड़ी अन्त्य तथा Vishaka की नाड़ी मध्य है। अतः नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे तथा इसका इनके स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं होगा परन्तु मंगल का Vishaka के स्वास्थ्य पर विशेष अशुभ प्रभाव रहेगा। इससे वे रक्त या पित संबधी परेशानियां प्राप्त करेंगी तथा गुप्त या धातु संबधी रोगों का भी उन्हें सामना करना पड़ सकता है। साथ ही मासिक धर्म संबंधी अनियमिता से भी कष्ट की अनुभूति करेंगी। अतः इन प्रभावों में न्यूनता लाने के लिए Vishaka को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Pradeep और Vishaka का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Pradeep और Vishaka के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Vishaka के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Vishaka को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Vishaka को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Pradeep और Vishaka सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Pradeep और Vishaka का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Vishaka के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद Vishaka अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से Vishaka पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि Vishaka अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

Pradeep की अपनी सास से संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उनके प्रति श्रद्धा सम्मान एवं सहयोग का भाव रहेगा। Pradeep सपत्नीक समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता की वृद्धि होगी। साथ ही Pradeep का व्यवहार उनके प्रति विनम्रता से युक्त रहेगा।

ससुर के साथ भी Pradeep के संबंधों में मधुरता का भाव रहेगा। साथ ही इन दोनों के मध्य दामाद ससुर की अपेक्षा पिता पुत्र का भाव अधिक रहेगा। Pradeep भी समय समय पर अपने समस्याओं के समाधान के लिए ससुर से सलाह लेते रहेंगे लेकिन साले तथा सालियों से संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण Pradeep के प्रति अनुकूल रहेगा जिससे उनके आपसी संबंध अनौपचारिक रहेंगे।

Pradeep

आपका जन्म दिनांक 31 होने से तीन एवं एक के योग से आपका मूलांक चार होता है। इसका अधिष्ठाता भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मतानुसार हर्षल ग्रह को माना गया है। अंक तीन का स्वामी बृहस्पति तथा अंक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है।

मूलांक चार के प्रभाव से आप अचानक एवं आश्चर्य जनक प्रगति प्राप्त करेंगे। आपको वही कार्य अच्छे लगेंगे, जिनके द्वारा शीघ्रता से ऊँचाईयाँ प्राप्त की जा सके। ऐसा ही कार्यक्षेत्र आपके लिये अनुकूल रहेगा, जिनमें कम समय में अधिक लाभ कमाया जा सके। आपकी विचारधारा थोड़ी आधुनिक रहेगी एवं पुरानी रीतियों, मान्यताओं के आप हिमायती नहीं होंगे। उनमें परिवर्तन की इच्छा रखेंगे। इससे आपको विरोधियों का सामना करना पड़ेगा।

धन संग्रह आप अधिक नहीं कर पायेंगे। किन्तु आपको समाज में नाम, यश, पद-प्रतिष्ठा अच्छी प्राप्त होगी। सामाजिक क्षेत्र में आप आमूल-चूल परिवर्तन के हामी होंगे। लेकिन परिस्थितियाँ हर समय आपका साथ दें यह संभव नहीं है। कभी आपकी बात मानी जायेगी कभी नकार दी जायेगी। आप अपनी सफलता का मार्ग स्वयं संघर्ष करते हुए बनायेंगे। अतः संघर्ष करना आपकी आदत में आ जायेगा। जिससे एकाध घटनाएं ऐसी घटेंगी जो आपका मार्ग बदल देगी या स्थायी प्रभाव छोड़ जायेंगी।

अंक तीन के स्वामी बृहस्पति के प्रभाव से आप में बौद्धिक स्तर उच्चकोटि का रहेगा। आपके कई निर्णय चमत्कारिक होंगे। जिनसे आपको ख्याति मिलेगी। एक अंक के स्वामी सूर्य के प्रभाववश आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी और समाज में नाम तथा यश प्राप्त होगा।

Vishaka

आपका जन्म दिनांक 21 हैं। दो एवं एक के योग से आपका मूलांक 3 होता है। मूलांक तीन का अधिपति गुरु ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा एक का सूर्य है। अतः आपके जीवन में गुरु, चन्द्र तथा सूर्य ग्रह का शुभ-अशुभ प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी गुरु के प्रभाव से आप एक विदुषी महिला कहलायेंगी। विद्या के क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों में रुचि रखेंगी। अधिक आयु पर आप आध्यात्म के क्षेत्र में चली जायेंगी। आप एक अनुशासन प्रिय महिला होंगी एवं अपने अधीनस्थों से अपेक्षा रखेंगी कि वह भी अनुशासन में रहें । आप काम में शिथिलता या देरी पसन्द नहीं करेंगी। इससे आपके मातहत आपके विरोधी होंगे।

सूर्य के प्रभाव से आप एक दृढ़ प्रतिज्ञ महिला होंगी। स्वभाव में हठीपन भी रहेगा एवं आप अपने कार्यक्षेत्र में सूर्य के समान ही चमकेंगी। लेकिन चन्द्र प्रभाव से कभी कभी अंधेरे का सामना करना पड़ेगा। इससे आपके मन में निराशा के भाव आयेंगे। आपका जीवन सन्तुलित रहेगा एवं ऐसे कार्यों में आपका मन लगेगा जहाँ कार्य ईमानदारी से होता हो। आप

स्वयं अपनी मेहनत तथा सच्चाई पर भरोसा करेंगी और इसी के सहारे सफलताएं अर्जित करेंगी।

आपकी ऐसे कार्यों में रुचि रहेगी जहाँ बुद्धिजन्य कार्य होता हो। लेखन, पठन-पाठन, भाषण, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य करने पर आपको अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। सूर्य, चन्द्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आप अपने जीवन में उच्चता को अवश्य प्राप्त करेंगी एवं आपकी अन्तिम अवस्था काफी खुशमय रहेगी।

Pradeep

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगे।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगे। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता है। और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

Vishaka

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

Pradeep

ज्योतिषीय संरूपण आकृति से यह परिलक्षित हो रहा है कि आपका जन्म जयेष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में वृश्चिक लग्न में हुआ था। वृश्चिक लग्नोदय काल धनु राशि का नवमांश एवं मीन राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपका जन्म कालिक प्रभाव यह सूचित कर रहा है कि आप अपना विचार तो किसी अन्य कार्य के सम्बन्ध में रखते हैं, परंतु आप उद्देश्य के विपरीत कार्य सम्पादन करते हैं। आपके जीवन का लक्ष्य है कि आप पर्याप्त मात्रा में धनोपार्जन कर लें ताकि अपना आनन्दमय जीवन सुखपूर्वक बिता सके।

आपके बाहरी भाव से ऐसा परिदृश्य हो रहा है कि आप उच्चकोटि के धार्मिक प्राणी हैं। आप वार्ताक्रम में यह आश्वस्त कर देते हैं कि वस्तुतः क्या ठीक अथवा क्या गलत हैं। आपका आचरण धार्मिक है तथा आप उच्चस्तरीय धार्मिक प्राणी हैं। परन्तु आपकी आन्तरिक भावना यह है कि आप विपरीत बातों के प्रति अपना धार्मिक उपदेश प्रदान करें। वास्तव में आपका झुकाव धन प्राप्ति की ओर रहती हैं। आपके मन में धन प्राप्ति के प्रति प्रबल उत्कंठा रहती हैं कि अपने जीवन का सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त करें।

आप किसी भी प्रकार की अभद्रता पूर्ण कार्य-कलाप को त्यागने के लिए सक्षम हैं। आप पूर्ण शिक्षित, कुशाग्रबुद्धि के चालाक व्यक्ति हैं। आपमें यह विशेषता विद्यमान है कि आप जनसामान्य को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। क्योंकि आपमें भाषा के प्रति अभिरूचि रहती है। आप काव्य-कला और सामान्य भाषा के ज्ञाता है। आपके लिए व्यवसायों में अनुकूल प्रेस, प्रकाशन, विज्ञापन, प्रचार, पुस्तकों का प्रकाशन तथा वाद्य यंत्र का निर्माण कार्य उपयुक्त है। यदि आपकी अभिरूचि हो तो आप अभियंत्रिकी कार्य भी सम्पादन कर सकते हैं।

आपको अच्छी प्रकार से यथेष्ठ धन प्राप्ति के सभी सुन्दर सुअवसर प्राप्त होंगे। परन्तु आप बहुतायत में धन का व्यय भी करेंगे। आप चाहते है कि जनसामान्य के दृष्टिकोण में प्रभावशाली दृश्य हों तथा मूल्यवान साज शय्याओं से युक्त घर सुसज्जित दिखें तथा आधुनिक सौन्दर्य से युक्त हो।

आप प्रेम प्रसंग में भी कुछ उपयुक्त हो सकते हैं। आप अपने जीवन संगिनी के प्रति श्रद्धा रखते हुए अत्यधिक द्रवित हो जाते हो। परन्तु यदि वह अस्वस्थ्यता प्रदर्शित करती है तो आप इसे भाग्य की विडम्बना समझकर अन्य स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने को उद्यत हो जाते हो तथा इसे दुखद अनुभव करते हो तथा इसे संभावित घटना समझकर परित्याग करते हो। आप अपनी जीवन संगिनी के चयन के पूर्व आप अपने घरेलू कार्य-क्रम को विधिवत सम्पादित करते रहेंगे। आप अपने उत्तम जीवन-संगिनी के चयन एवं उत्तम तारतम्यता हेतु उस स्त्री का चयन करें जिसका जन्म वृश्चिक, कर्क, वृष, कन्या अथवा मकर राशि में हुआ हो।

आपका वासनात्मक उन्माद आपके स्वास्थ्य को समस्याग्रस्त बना सकता है। जिससे आपका गुप्तांग प्रभावित हो जायगा। अतः रोमांचकारी सीमा पर सावधानी पूर्वक चलें।

इसके अतिरिक्त अन्य रोग यथा बवासीर एवं ट्यूमर रोग से भी आपका स्वास्थ्य अद्योगति को प्राप्त कर सकता है। अतः आपके लिए उचित मार्ग यह है कि आप अपने स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण सतर्क रहें, अन्यथा आपके जीवन के 13 वें 27 वें एवं 49 वें वर्ष में गंभीर स्वास्थ्य बाधा उपस्थित हो जाएगी। यदि आप सुनियोजित ढंग से समुचित सतर्कता बरतें तो उपरोक्त रोगों से सुरक्षित रह सकते हैं।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग, नारंगी, लाल, पीला एवं क्रीम रंग है। परंतु आप सफेद, हरा एवं नीले रंगों का परित्याग करे।

आपके लिए अंकों में अनुकूल 1, 2, 3, 4 एवं 9 अंक अनुकूल एवं ग्राह्य है। परंतु अंक 5, 6 एवं 8 अंक अव्यवहारणीय है।

असाप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

Vishaka

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में धनु राशि में हुआ था। आपके जन्म लग्नोदय काल सिंह का नवमांश एवं मेष राशि का द्रेष्काणा भी उदित था। धनु राशीय संबंधित जन्म प्रभाव की आकृति इस विषय की ओर इंगित करती है कि वास्तव में आपके जन्म का स्वरूप आपको सौभाग्यशाली होने का वरदान प्रदान करता है कि आप हर दृष्टिकोण से सुगमता पूर्वक अपने जीवन कक्ष में प्रवेश करके आप अपने जीवन में सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त धन संपत्तिवान होकर, आनंदित जीवन व्यतीत करेंगी।

आप अबाध गति से 28 वर्ष की आयु तक के सभी कार्यकलाप नियमित रखती रही तो यह सत्य है कि आपकी आयु की अवधि जीवन का सबसे भाग्यशाली समय प्रमाणित होगा। यह आपके जीवन का महत्वपूर्ण कदम होगा। आपके भाग्योदय के लिए यह समय उत्तम एवं उच्चस्तरीय धन, संपत्ति उपार्जन हेतु अनुकूल समय होगा। स्वाभाविक रूप से आपके लिए यह गर्व की बात होगी। परंतु कुछ समय के लिए आप अक्खड़पन दिखाने वाली होंगी। परंतु आप यदि कोई अनुचित कार्य न करें, शेष सामाजिक न्यायपालक बन कर पूर्णरूपेण पति एवं बच्चों से अच्छी प्रकार संबंधित होकर रहे तथा उनके लिए कुछ भी कोई भी त्याग करने हेतु तैयार रहे। आप सदैव अपने उन मित्रों के प्रति निष्ठावान रहती हो जो आवश्यकता पड़ने पर आपकी मदद करते हैं। आप स्वाभाविक रूप से किसी भी कल्याणकारी कार्य हेतु अर्थ दान करोगी।

आप व्यक्तिगत रूप से विश्वासी, सच्ची, ईमानदार, सबों पर सदैव विश्वास करने वाली तथा निष्कपट भाव से सबों पर विश्वास रखने वाली हैं। आप किसी भी सभा या सार्वजनिक स्थान पर सत्यभाषण करेंगी। जो अन्यों की अपेक्षा अरूचिकर नहीं होता है। आप असावधानी पूर्वक निष्पक्ष भाव से अपनी अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति कर देती हैं। फलस्वरूप आप अपनी पवित्र अभिरूचि को सार्वजनिक कर देती हैं। परंतु आप जिनसे संबद्ध रहती हो, उन्हें अपने सिद्धांत के अनुसार महत्व प्रदान करती हो।

आप अपनी कुशाग्र, बुद्धिमत्ता एवं सैद्धांतानुसार अपनी कार्य योजना को कार्यान्वित कर अपनी योजना के प्रति अग्रिम रूप से कारवाई करती हैं। आप सच्ची भावना से कठिन कर्म हेतु प्रस्तुत रहती हैं। आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कृत संकल्पित रहती हैं। आप आर्थिक लाभांश एवं सभी प्रकार के अभाव की पूर्ति हेतु आप कार्यानुरूप प्रस्तुत रहती हैं।

आप अपने स्वभाव के अनुरूप कार्य व्यवसाय का चयन कर सकती हैं। आप एक बार लेखन, व्यवसाय, संपादन कार्य, पुस्तक प्रकाशन का कार्य, कंपनी लॉ, राजनीति अथवा धार्मिक संस्थाओं से संबंधित अथवा शैक्षणिक संस्थाओं का संचालन कार्य से संबद्ध हो सकती है। अतः आप वैदेशिक लोगों से संबंध का विस्तार कर, दो बार वैदेशिक भ्रमण की व्यवस्था कर सकती हैं।

आपका किसी भी प्रकार से किसी भी विषय में यथा सट्टेबाजी आदि में आसक्त हो जाना आपके लिए अनर्थकारी प्रमाणित होगा।

आपके लिए निम्नांकित निर्देशों का अनुपालन करना उत्तम एवं समृद्धिकारक है।

आप साप्ताहिक दिनों में महत्वपूर्ण कार्य संपादन हेतु अनुकूल दिन मंगलवार, गुरुवार, एवं रविवार का दिन बहुत उत्तम प्रमाणित होगा। शुक्रवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

आपके लिए अंकों में अंक 3, 5, 6 एवं 8 अंक फलदायी एवं अंक 2, 7 एवं 9 अंक सर्वथा त्याज्य है।

आपके लिए रंगों में लाभदायक रंग सफेद, क्रीम रंग, हरा, नारंगी, सूआपंखी एवं नीला रंग उपयुक्त है। परंतु रंग लाल, मोतिया एवं काला रंग सर्वथा अनुपयुक्त एवं अव्यवहारणीय है।

Pradeep

आपका जन्म आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ग श्वान, वर्ण विप्र, नाडी अन्त्य, योनि मार्जार तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "डो" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों में की जाती हैं। इसके चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने से जातक के पिता को कष्ट होता हैं। अतः इस दोष के निवारण के लिए जन्म समय में ही नक्षत्र की शान्ति शास्त्रोक्त विधि से अवश्य ही कर लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा पुनः 27 दिन के बाद जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रो के दशांश का हवन करना चाहिए। इससे अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। यह कार्य किसी योग्य विद्वान से करवाना चाहिए।

मंत्र - ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

आप यात्राओं तथा भ्रमण में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करने वाले होंगे। आपके स्वभाव में उग्रता की प्रबलता रहेगी तथा अपनी उग्रता से व्यर्थ में ही अन्य जनों को कष्ट प्रदान करेंगे। आप अपने उत्तम धन को भी अनावश्यक कार्यों पर व्यय करने वाले होंगे। आपकी प्रवृति भी विलासयुक्त रहेगी।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

समाज में अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आपका स्वभाविक आकर्षण रहेगा। आपका शरीर स्वस्थ रहेगा। साथ ही आप किसी भी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर भी आप उसका अहसान अल्प मात्रा में ही मानेंगे। इसके साथ ही आप पहले सम्पन्न कार्यों को ही पुनः करने वाले होंगे।

लुब्धः खञ्जः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

भक्ष्य या अभक्ष्य पदार्थो में आप कोई भेद नहीं रखेंगे तथा जो भी सात्विक या तामसिक पदार्थ मिलेगा उसके भक्षण करने में शीघ्रता करेंगे। आपके कई कार्य कठोरता से पूर्ण होंगे। समयानुसार आप मिथ्याभाषण भी करेंगे। आप में दुष्टता का प्रभाव परिलक्षित होगा। अच्छे कार्यों की प्रवृति आप में मध्यम रूप से रहेगी तथा यत्नपूर्वक इन्हें सम्पन्न करते रहेंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

आपकी बुद्धि भी मध्यम होगी तथा कृतज्ञतापूर्ण शब्दों को आप अधिकांश प्रयुक्त करेंगे। आपकी प्रकृति क्रोधी होगी तथा चाल चलन भी मध्यम श्रेणी का रहेगा। आप समाज से उचित सम्मान प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

Vishaka

आप चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुई है। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि व्याघ्र, वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, गण राक्षस तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "र" या "रा" अक्षर से होगा। यथा रश्मि, रानी आदि

आपकी प्रवृति नैसर्गिक रूप से धार्मिक होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन एवं सम्मान करती रहेंगी। आप सपरिवार हमेशा अल्प उपलब्धि में संतुष्ट रहेंगी। अनावश्यक इच्छाएं तथा आवश्यकताओं पर आप पूर्ण रूप से नियंत्रण रख सकेंगी। धनैश्वर्य एवं धान्यादि का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इनसे आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करके सपरिवार जीवन यापन करेंगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

आप हमेशा नवीन वस्त्रों को धारण करने के प्रति प्रबल मात्रा में रूचिशील रहेंगी तथा गले में माला इत्यादि आभूषणों के प्रति भी आपका प्रेम रहेगा। आपकी आंखे अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

आपके अपने मन के गुप्त भेदों को अपने तक ही सीमित रखने में सर्वथा समर्थ रहेंगी तथा किसी अन्य व्यक्ति को कभी भी अपने मन की बातों को नहीं बताएंगी। इस प्रकृति से आप आजीवन युक्त रहेंगी। आप अपने समाज में एक आदरणीया तथा सम्माननीया होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा लेकिन अन्य जनों से भी आपके घनिष्ठ एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे तथा सबके प्रति आपके मन में पूर्ण अनुराग रहेगा।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

आप अत्यन्त ही पराक्रमी तथा साहसी महिला होंगी तथा अपने शत्रुओं को पराजित करने एवं कुचलने में पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगी। आपका कोई भी शत्रु प्रत्यक्ष रूप से मुकाबला करने का कभी भी साहस नही कर पाएंगा। नीति शास्त्र का आपको विषद् ज्ञान रहेगा तथा नीति संबंधी सभी कार्यो में आप निपुण रहेंगी। आपकी रूचि नाना प्रकार के विचित्र वेशभूषा धारण करने के लिए भी उत्सुक रहेगी। शास्त्रों के प्रति आप पूर्ण श्रद्धावान रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक शास्त्र ज्ञान में अपनी बुद्धि का परिचय देगी।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

राशिफल

Pradeep

कर्क राशि में जन्म होने के कारण आप शरीर से स्वस्थ ही रहेंगे। आप अपने समस्त कार्यों को करने में निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। तथा जीवन काल में प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके धनवान कहलाएंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। धार्मिक भावना भी आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी तथा सभी धार्मिक कार्यकलापों को आप श्रद्धा के साथ सम्पन्न करेंगे। अपने श्रेष्ठ संबंधियों तथा गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष भी होंगे तथा अपने बुद्धिबल से सबको प्रभावित करेंगे। कभी कभी आप में क्रोध की भावना की अधिकता हो जाएगी एवं आप अपने को बहुत ही दुःखी भी अनुभव करेंगे। आप सन्मित्रों के मित्र होंगे तथा अन्य कार्य अथवा कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे। शारीरिक बल से आप मध्यम रहेंगे तथा अपने घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से प्रवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से युक्त रहेगी तथा आपका स्वरूप अलौकिक तेज से युक्त होकर दर्शनीय होगा। आप अपने मेहनत के द्वारा कमाए हुए धन से विपुल धन के स्वामी बनेंगे। ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा भाव रहेगा। आप समयानुसार उनके प्रति अपने श्रद्धाभाव का प्रदर्शन करते रहेंगे। श्रेष्ठ कुल में जन्मे लोगों के प्रति आप के मन में वास्तविक श्रद्धा भाव रहेगा तथा उनको सेवा प्रदान करने में आप परम शन्ति तथा सन्तुष्टि की प्राप्ति करेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।

जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रम से इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। साथ ही अन्य कलाओं के विषय में भी आपको ज्ञान रहेगा। आपका आचरण श्रेष्ठ तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणीय होगा। आपको फूलों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने से प्रसन्नता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिमता से आप समाज में विख्यात होंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपका कंठ भाग थोड़ा स्थूल रहेगा तथा आप पूर्ण रूप से स्त्री जाति के वश में रहेंगे। आपके समस्त मित्र सद्गुणों से युक्त होंगे। आप बहुत भवनों के निर्माता होंगे अथवा बहुत से मकानों के स्वामी भी बन सकते हैं। आपका कद भी छोटा रहेगा तथा वक्रगति से शीघ्र चलना आपको रूचिकर लगेगा। साथ ही संतति में पुत्रों की संख्या आपकी अल्प रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सुख सम्पतियों का उपभोग करने वाले होंगे तथा ज्योतिष शास्त्र के आप ज्ञाता एवं श्रद्धालु होंगे तथा स्वभाव से सुशील रहेंगे। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में चन्द्रकलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त करते रहेंगे अर्थात जीवन उतार चढ़ावों से संघर्षपूर्ण रहेगा। आप स्नेहाभिभूत होकर ही वश में किये जा सकेंगे। दबाव या बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों को आप पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। फलतः मित्रों के प्रिय रहेंगे। आपकी रूचि जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण में भी निरन्तर बनी रहेंगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य शाली पुरूष होने का आपको गौरव प्राप्त होगा एवं आपके अधिकांश कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे। आपके कार्य धैर्यपूर्वक होंगे। शीघ्रता तथा उतावली करना आपके स्वभाव के विरूद्ध होगा। स्वगृह से आप युक्त रहेंगे तथा आपका अधिकांश समय भ्रमण करने या यात्रादि में व्यतीत होगा। आप का अन्य जनों से लौकिक व्यवहार विनयशील रहेगा। आप के अन्दर सैक्स की भी प्रबलता रहेगी। तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका हार्दिक आभार व्यक्त करेंगे। आप राज्य या सरकार के किसी उच्च पद को सुशोभित करने में भी सफल रहेंगे। सत्य का पालन करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक सत्य एवं प्रिय वाणी ही बोलेंगे जो सुनने वाले को रूचिकर लगेगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।

सारावली

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों में तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा सोमवार का भी उपवास करना चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चावल, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

Vishaka

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शारीरिक सरंचना की दृष्टि से पतली होंगी तथा मुखमंडल भी पतला होगा। आपकी आंखे सुन्दर एवं बड़ी बड़ी होंगी तथा नाक ऊँची होगी। आपके पास वाहन प्रर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहेंगे तथा अन्य सामाजिक पुरूषों से भी आपके संबंध रहेंगे। वाहन के अतिरिक्त भूमि से भी आप बलशाली रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ प्राप्त रहेगा। आपके पराक्रम को समाज में सभी वर्ग के लोग स्वीकार करेंगे तथा आपको हादिक मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धनैश्वर्य तथा वैभवादि से भी आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी इनकी न्यूनता की आपको कभी भी अनुभूति नहीं होगी साथ ही पति को अपने वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगी। क्रियाशीलता की आपमें बहुलता रहेंगी तथा कई कार्यो की आप अच्छी ज्ञाता भी होंगी। देवताओं तथा ब्राहमणों की भी आप भक्त होंगी। आपकी प्रवृति धन इत्यादि के संग्रह में भी रहेगी तथा बन्धु वर्ग को भी आप पूर्ण रूप से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप सज्जनों तथा समाज की सम्मानपूर्वक सेवा कार्य करती रहेंगी। आप विदुषी होंगी तथा पवित्रता पूर्ण जीवन का निर्वाह करेंगी। आप का अधिकांश समय भ्रमण एवं यात्रादि

करने में ही व्यतीत होगा। साथ ही वस्तुओं को खरीदने तथा बेचने का कार्य अर्थात् व्यापार में आप हमेशा निपुण एवं सफल रहेंगी। आप समय समय पर कई प्रकार की बाधाओं से भी व्याकुलता प्राप्त करेंगी। आप अपने समस्त सम्बन्धियों तथा बन्धुवर्ग की यत्न पूर्वक भलाई करेंगी तथा उन्हें समयानुसार पूर्ण सहायता देंगी। परन्तु उन्हीं से बाद में आपको अपयश भी प्राप्त होगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः कयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यो को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। शीघ्रता से कार्य करना आपकी प्रवृति के प्रतिकूल होगा। न्याय में आपकी पूर्ण आस्था रहेंगी तथा स्वयं भी न्यायप्रिय होंगी तथा निष्पक्ष रूप से अपनी बातों को अन्यों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी। अतः लोग आकर आपसे पंच या मध्यस्थ का अनुरोध करेंगे जिसका आप निपुणता से निर्वाह करेंगी। साथ ही आपकी संतति संख्या अल्प होगी एवं भाग्योदय भी देर से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम होगा। सरकार के उच्चपदाधिकारियों तथा अधिकारियों को प्रसन्न करने में आप हमेशा निपुण रहेंगी तथा इनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगी साथ ही बंधुवर्ग को कुछ न कुछ सहयोग अवश्य प्रदान करती रहेंगी लेकिन आपका स्वभाव अधिक बोलने वाला भी होगा जिसका अन्य जनों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। ज्योतिष अथवा ग्रह नक्षत्र संबंधी शास्त्रों में आपकी रूचि रहेंगी तथा इसकी आप एक श्रेष्ठ विदुषी होंगी। बन्धु तथा सेवकों के प्रति भी आपके मन में प्रशंसनीय अनुराग रहेगा

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

जीवन में आप प्रायः असमय पर क्रोध करने वाली होंगी तथा इससे समय समय पर आप दुःख की भी अनुभूति करती रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिससे अन्य जन आपसे हमेशा प्रभावित रहेंगे। आपकी आंखो में भी चंचलता हमेशा विद्यमान रहेगी परन्तु आथिक स्थिति आपकी उतार चढ़ाव से युक्त रहेगी। आप घर के अन्दर अत्यन्त शक्ति शाली होंगी परन्तु घर से बाहर दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। व्यापार में आप हमेशा

सलंग्न रहेंगी तथा मित्र वर्ग से हमेशा आप विशेष स्नेह तथा आदर का भाव प्रदर्शित करेंगी जिससे मित्रवर्ग आप पर पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास रखेगा। इसके अतिरिक्त आप घर से बाहर विदेश या परदेश में भी निवास करेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप वाहनादि से हमेशा सुशोभित रहेंगी। आपके पास धन वैभव प्रचुर मात्रा में सर्वदा विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त मित्र वर्ग से भी आपका स्नेह भाव रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधा या अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए साथ ही सोना, चांदी, हीरा, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध आदि का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए ऐसा करने से आपको मन की शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान स, सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Pradeep

आपके जन्म समय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं आकर्षक होते हैं तथा परिश्रम एवं लगन के द्वारा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा कई विषयों के ज्ञानार्जन में इनकी रूचि रहती है तथा समाज में विद्वान के रूप में अपनी पहचान बनाते हैं। कुल या परिवार में ये श्रेष्ठ रहते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आदरणीय रहते हैं। आत्मशक्ति की इनमें प्रबलता रहती है तथा अत्यधिक महत्वाकांक्षी भी होते हैं। धन संग्रह के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा धनार्जन में नैतिक मूल्यों का पालन अल्प मात्रा में ही करते हैं। भावुकता की भी इनमें न्यूनता रहती है तथा अपने समस्त कार्यों को के द्वारा सम्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित के क्षेत्र में ये सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान पुरूष होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप में निर्भयता तथा लगनशीलता का भाव भी विद्य मान रहेगा फलतः कार्य क्षेत्र में आप प्रभावशाली रहेंगे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि भी बनी रहेगी।

आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील होंगे। धनसंग्रह के प्रति आपकी तीव्र रूचि होगी। आप जीवन में महत्वपूर्ण कार्यों को भावुकता से नहीं अपितु बुद्धि से सम्पन्न करेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी होगी। पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। परिवार की उन्नति एवं मर्यादा की वृद्धि के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके द्वारा परिवार की प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में वृद्धि होगी तथा समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप एक प्रतिष्ठित तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

आप एक चतुर एवं विद्वान व्यक्ति होंगे तथा अपनी बुद्धिमता एवं सूझबूझ से सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। स्त्री का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु दाम्पत्य सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। आप एक कर्तव्यपरायण एवं ईमानदार व्यक्ति होंगे जिससे अधिकारी तथा आपके सहयोगी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा आप नित्य उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे।

धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को यदा कदा ही सम्पन्न करेंगे लेकिन इस संदर्भ में आप यदा कदा तीर्थ यात्रा आदि कर सकते

हैं। मित्र वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप विद्वान परिश्रमी लगनशील एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

Vishaka

आपके जन्म कुंडली में प्रथम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यता धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं बलवान होते हैं परन्तु अभिमान का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है। धार्मिकता की भावना भी इनमें रहती है तथा बुद्धिमता से अपने सासांरिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करते हैं। जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ होते हैं। ये जातक आदर्शवाद तथा अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत होकर भौतिक सुखोपभोग करने में सफल रहते हैं। इनके कार्य हमेशा विधिपूर्वक सम्पन्न होते हैं। अन्य जनों के ये विश्वासपात्र होते हैं परन्तु स्वयं किसी पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता के भाव से भी ये युक्त रहते हैं तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। राजनीति, कानून तथा गणित आदि विषयों में इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता अर्जित करते हैं। इन्हें हमेशा प्रेम एवं स्नेह के भाव से ही वश में किया जा सकता है अन्य किसी भौतिक प्रलोभनों का इन पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलशाली महिला होंगी तथा परिश्रम एवं सोच समझ कर अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप एक अध्ययनशील प्रवृति की महिला होंगी अतः विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित करके एक विदुषी के रूप में समाज में आपकी छवि रहेगी। जीवन में आप एक निश्चित आदर्श एवं उददेश्य के लिए संघर्षशील रहेंगी। आप कभी किसी से अनावश्यक द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रहेंगी फलतः अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। शत्रु एवं विरोधियों के प्रति भी आपके मन में उदारता होगी। इसके अतिरिक्त आप अपनी व्यवहारकुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्यशील प्रवृति से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। लौकिक व्यवहार की आप ज्ञाता होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से समाज तथा कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही सर्वत्र आपके उन्नतिमार्ग प्रशस्त होंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा युवावस्था में आप परिश्रम एवं संघर्षपूर्वक सुख एवं धन अर्जित करेंगी।

व्यवसाय के प्रति आपके रूचि होगी तथा व्यापार आदि कार्यों से लाभ अर्जित करेंगी। आर्थिक दृष्टि से आपके स्थिति सुदृढ़ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनवान महिला कहलाएंगी। अपने श्रेष्ठ एवं पराक्रमी कार्यों से समाज में आपको प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों

को सम्पन्न करने में तत्पर होंगी तथा इससे आपको मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप बुद्धिमान पराक्रमी व्यवहार कुशल तथा परिश्रमी महिला होंगी तथा जीवन में इच्छित सुखार्जन करके प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Pradeep

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

Vishaka

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगी तथा अपने अधिकांश समय को अनावश्यक वार्तालाप में व्यतीत करेंगी। आप इतनी बातूनी महिला होंगी कि अन्य लोग आप पर आसानी से नियंत्रण नहीं कर सकते हैं। आप आधुनिक विचारों से युक्त रहेगी तथा स्वभाव में विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके साथ ही आसानी से किसी को अपना मित्र नहीं बनाएंगी तथा खूब सोच समझकर जब किसी से पूर्ण सन्तुष्ट हो जाएंगी तभी उसे अपना मित्र बनाएंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा। लेकिन आंतरिक मन से परिवार के विषय में पूर्ण चिन्तित रहेंगी परन्तु प्रयत्क्ष में उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करेंगी। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो सकता है अतः ऐसी स्थिति में आपको सावधान रहना चाहिए फिर भी पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा उनकी प्रसन्नता तथा खुशहाली के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार के स्वादों की प्रिय रहेंगी तथा समय समय पर इनका आस्वादन करती रहेंगी लेकिन यदा कदा आपको नेत्र संबंधी रोग से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नौकरी या

अन्य साधनों से आप धनार्जन करेंगी साथ ही विदेश में भ्रमण आदि से भी लाभान्वित हो सकती हैं। इस प्रकार आप वैभव शाली जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Pradeep

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्य प्राप्ति होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीध्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकते है। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

Vishaka

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी

बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगी एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला भी होंगी तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध महिला से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती हैं। स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करेने में समर्थ होंगी। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीघ्र लाभ के योग बनते है। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपभी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से सफलताएं प्राप्त करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उतीर्ण करेंगी इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Pradeep

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने सम्स्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते है। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रूचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते है। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षांओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यो में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

Vishaka

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकती हैं। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगी। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रूचिशील होंगी। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रूचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगी। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विदुषी के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगी। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सदभावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोंनो का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली महिला मानी जायेंगी।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेगी जिससे उनका भविष्य उज्जवल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगी तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगी। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चों को वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Pradeep

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रूचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रूचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे ।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

Vishaka

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया मिथुन राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कलाप्रेमी तथा हास्य प्रिय प्रवृति का व्यक्ति होता है। साथ ही वह विद्वान् साहित्य प्रेमी उत्तम कार्यो को करने वाला तथा चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्यो को करने में दक्ष रहेंगे। उनकी वाणी मधुर होगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के प्रति अध्ययन की रूचि होगी। वह हास्य युक्त प्रवृति की भी व्यक्ति होंगे जिससे सभी लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। अतः व्यायाम आदि की उन्हें सलाह देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कला के प्रति उनका प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह किसी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे आप प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप जीवन में नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें पितृवत सम्मान प्रदान करेंगी तथा महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी सलाह एवं सहमति अवश्य लेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके सद्व्यवहार तथा मधुरवाणी से प्रभावित होंगे एवं उन्हें यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको यथोचित लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें इच्छित लाभ एवं उन्नति होगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Pradeep

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सिंह राशि अग्नितत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। कार्यक्षेत्र में आप सामान्यतया उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा नवीन आयाम स्थापित करने में सफल होंगे।

आपके लिए आजीविका की दृष्टि से आपके लिए प्रशासकीय सेवा, औषधिविज्ञान, सरकारी कर्मचारी, कम्प्यूटर साइंस, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत विज्ञान, पर्यटन (पर्वतीय) क्षेत्र, उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। साथ ही वैज्ञानिक शोध क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते है। अतः सतत उन्नति एवं लाभ के लिए आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही आजीविका का चयन करना चाहिए। इससे उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए औषधि व्यापार, ऊनी वस्त्र, रत्न संबंधी कार्य, विद्युत एवं मैकेनिकल उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण, पर्यटन केंद्र का स्वामित्व, सरकारी ठेके आदि से लाभ एवं प्रचुर मात्रा में धन अर्जित होगा। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करेंगे तो इससे आपको इच्छित उन्नति की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों एवं वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।

जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे इससे आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप सामाजिक एवं शैक्षिणक संस्थाओं में भी किसी सम्मानीय सदस्य या पदाधिकारी के रूप में कार्य कर सकते है इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी योग्य एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही सामाजिक जनों के कल्याणकारी कार्यो के करने में भी समर्थ होंगे। आपके प्रति उनके मन में अपनत्व का भाव होगा तथा उच्चस्तर पर शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा उनके प्रभाव एवं सहयोग से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे साथ ही आप भी पिता के सम्मान वृद्धि के लिए परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

Vishaka

आपके जन्म समय में दशम भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। कन्या राशि पृथ्वी तत्व एवं सूर्य अग्नितत्व ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। इसके अतिरिक्त आप एक से अधिक कार्य करने की इच्छुक होंगी।

दशमभाव में कन्या राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र प्रशासकीय सेवा, औषधि विज्ञान, सरकारी कर्मचारी, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत विभाग, कलाकार या चित्रकारी, साहित्य सृजन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति हो सकती है। अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही यत्नपूर्वक अपनी आजीविका क्षेत्र का चयन करना चाहिए। इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए कैमिस्ट, ऊनी तथा मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, रत्न संबंधी कार्य, कलात्मक वस्तुओं का कार्य, खेती एवं बागवानी, सरकारी कार्य या ठेके आदि से इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनीति के क्षेत्र में भी आप यथोचित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी तथा उच्चाधिकारी से सहयोग एवं लाभ मिलेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं वस्तुओं का ही व्यापार करना चाहिए।

दशम भाव में सूर्य के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी सफल होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति होगी। साथ ही सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के आप सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी भी हो सकती है। इससे आपके प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगी।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा समाज में पूर्ण प्रभाव होगा एवं सभी लोग उन्हें वांछित आदर प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका प्रमुख योगदान होगा एवं उनके प्रभाव से इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी। साथ ही आप भी अपने परिश्रम एवं पराक्रम से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगी एवं पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगी। इसके साथ ही आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2018

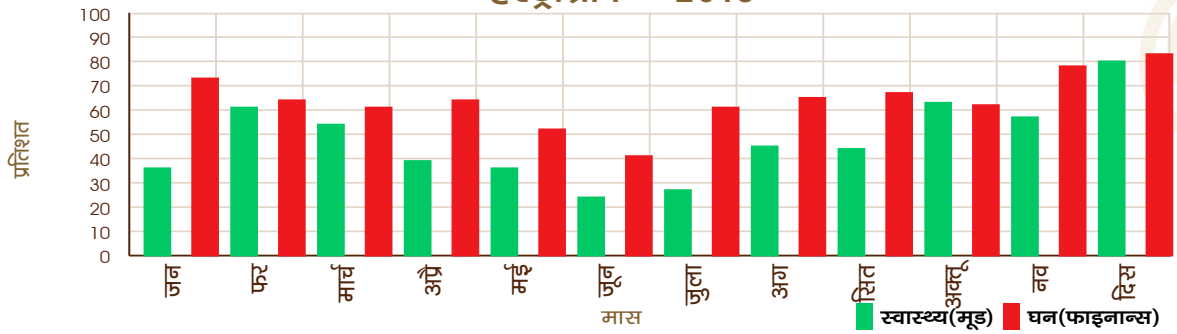

Vishaka
एस्ट्रोग्राफ – 2018

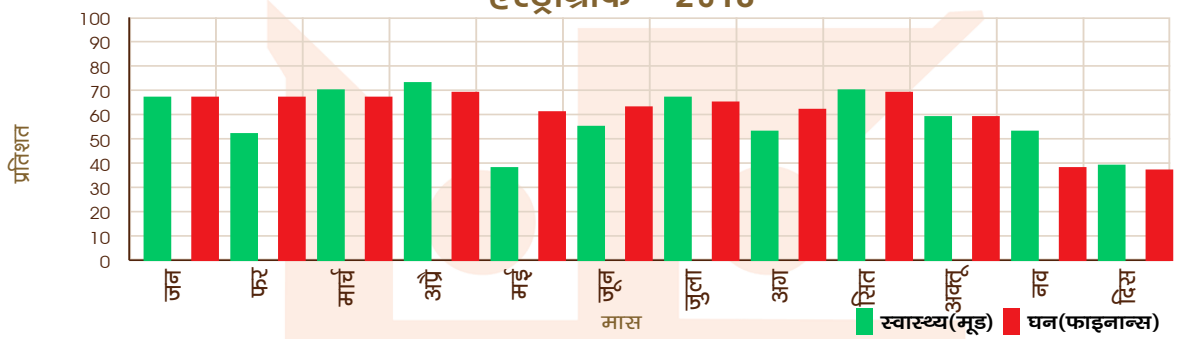

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2019

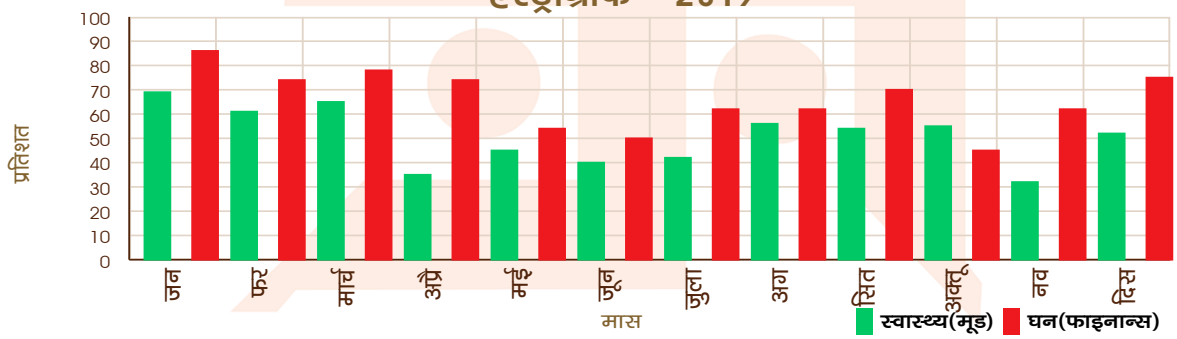

Vishaka
एस्ट्रोग्राफ – 2019

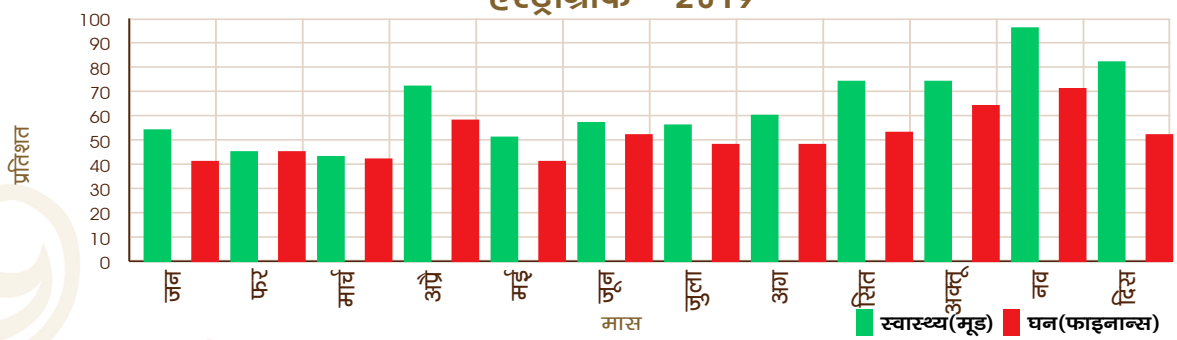

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2020

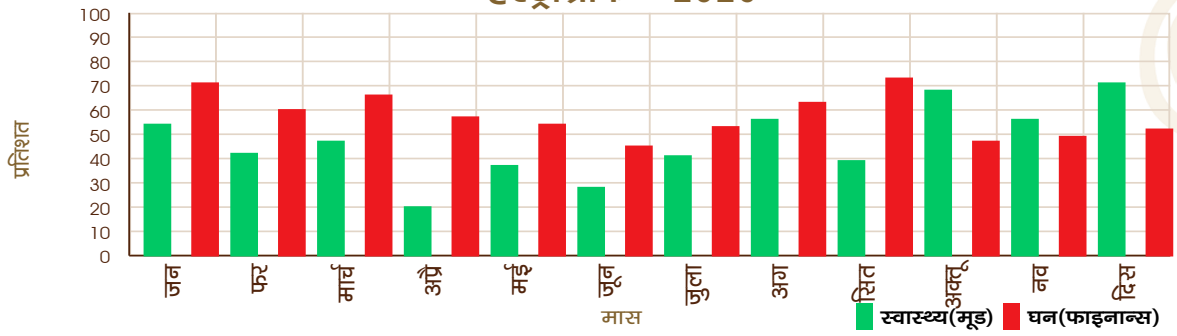

Vishaka
एस्ट्रोग्राफ – 2020

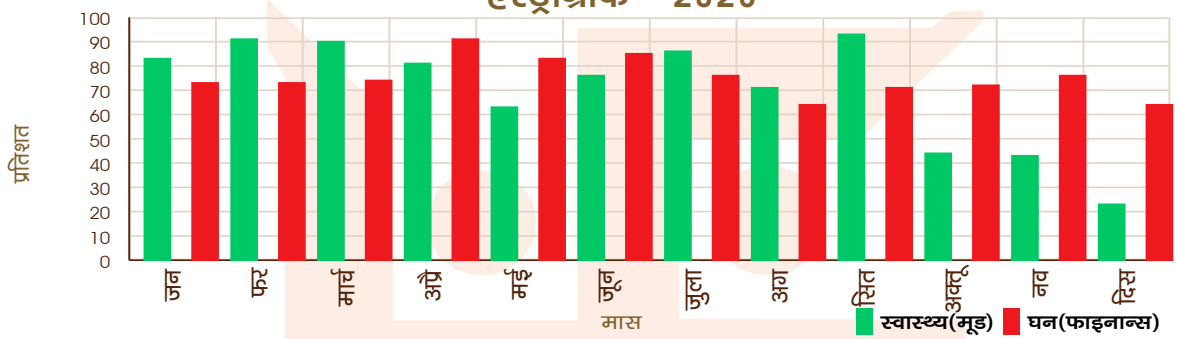

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2021

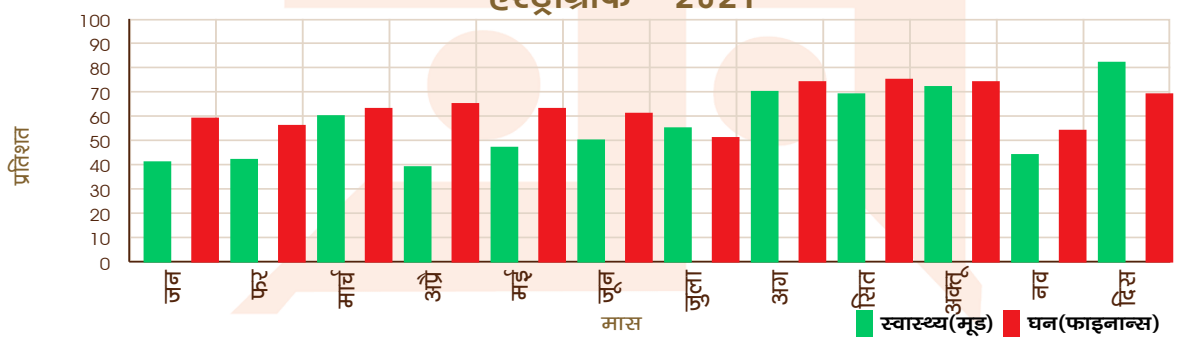

Vishaka
एस्ट्रोग्राफ – 2021

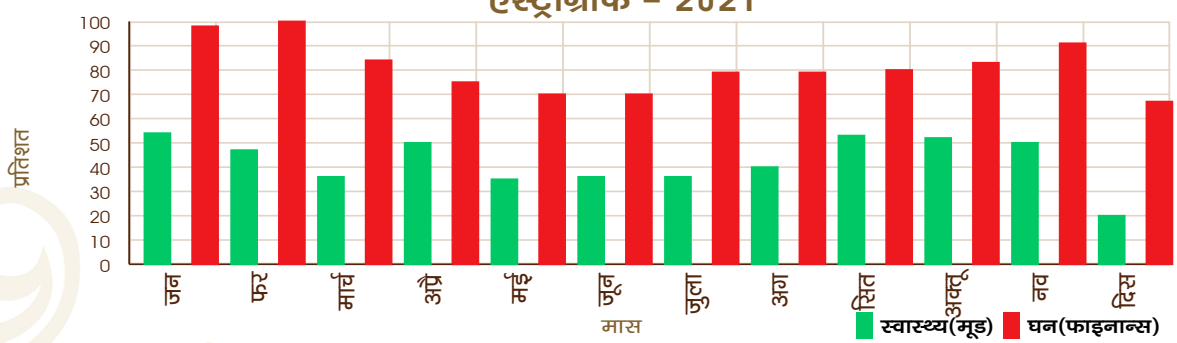

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2022

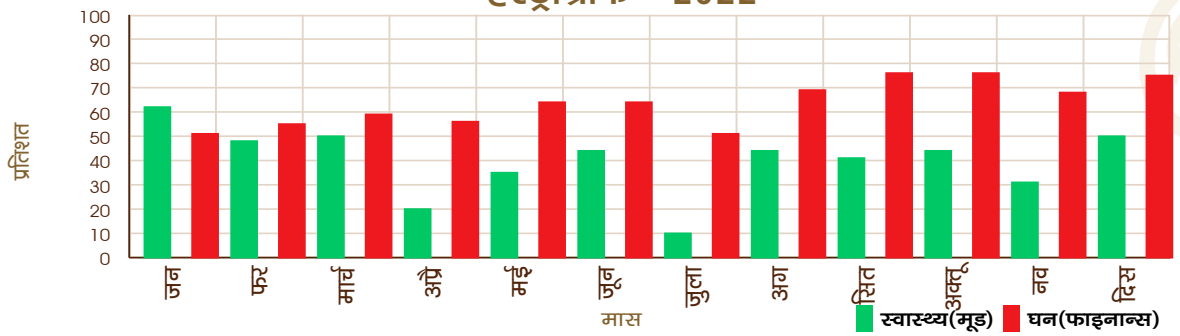

Vishaka
एस्ट्रोग्राफ – 2022

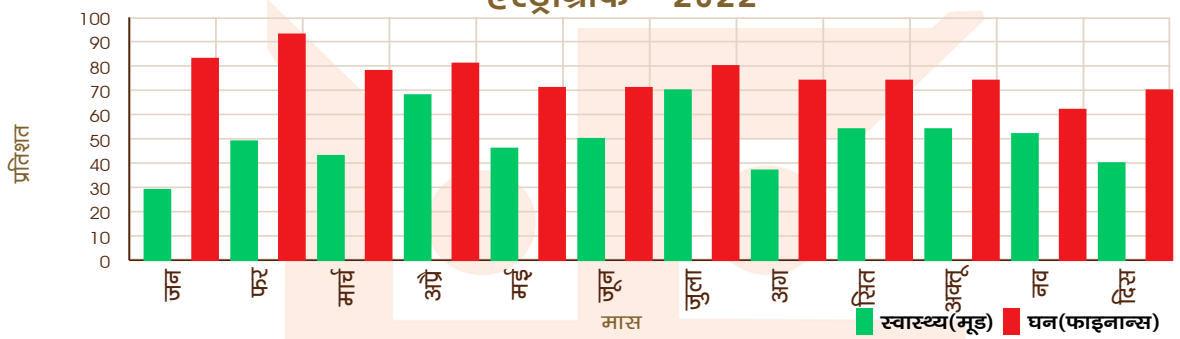

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2023

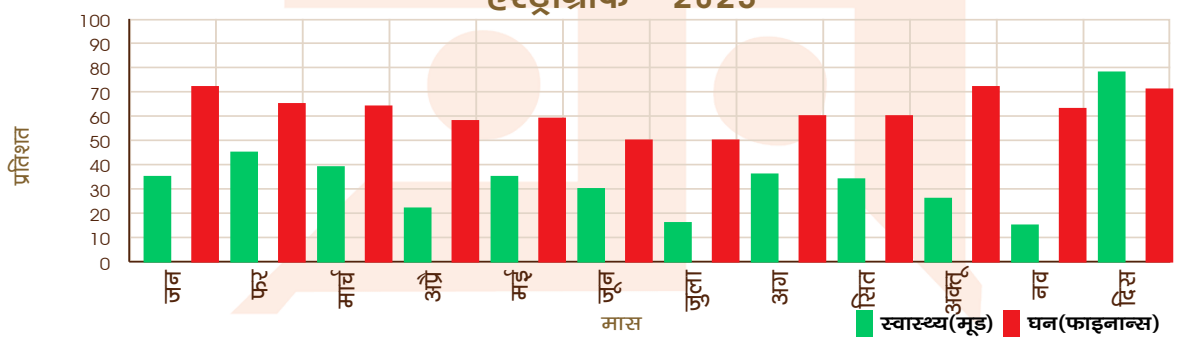

Vishaka
एस्ट्रोग्राफ – 2023